RNI No. : UPHIN/2023/84344 ₹ : 30

प्रेरणा विचार

फरवरी-2024 (पृष्ठ-36) गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

हमारे राम आ गए

प्रेरणा विचार मासिक पत्रिका ऑनलाइन प्रतियोगिता (परीक्षा परिणाम)

प्रेरणा विचार मासिक पत्रिका से जुड़े पाठकों के लिए रविवार, 14 जनवरी 2024 को सायं 5.00 बजे हुई ऑनलाइन परीक्षा का परिणाम निम्नलिखित है-

प्रथम स्थान - मैत्रेयी।

द्वितीय स्थान- सुनील कुमार गुप्ता।

तृतीय स्थान - अमित चौहान, कुमार अनुपम और महेंद्र बनेशी।

पाठकगण प्रेरणा विचार पत्रिका के बारे में अपने सुझाव एवं प्रतिक्रिया, 'संपादक के नाम पत्र' शीर्षक से हमारी ई-मेल आईडी (prernavichar@gmail.com) या वाट्सएप नम्बर (9354133708) पर भेज सकते हैं। चुने हुए पत्रों को पत्रिका के अगले अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

हमारे सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म से जुड़ने के लिए स्कैन करें

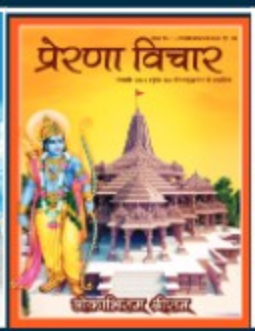

प्रेरणा विचार पत्रिका की सदस्यता लेने के लिए स्कैन करें

@PRERNAVICHAR

+919354133708

प्रेरणा विचार

वर्ष -2, अंक - 2

RNI No. UPHIN/2023/84344

संरक्षक
मधुसूदन दादू

सलाहकार मंडल
श्री श्याम किशोर, डॉ. अनिल निगम
प्रो. (डॉ.) हरेन्द्र सिंह

संपादक
डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया

कार्यकारी संपादक
डॉ. प्रियंका सिंह

प्रबन्ध संपादक
मोनिका चौहान

समन्वयक संपादक
राम जी तिवारी

अध्यक्ष प्रीति दादू की ओर से मुद्रक/प्रकाशक डॉ. अनिल त्यागी द्वारा चंद्र प्रभु ऑफसेट प्रिंटिंग वर्क प्रा. लि. नोएडा से मुद्रित तथा प्रेरणा भवन सी-56/20 सेक्टर-62 नोएडा, गौतमबुद्धनगर से प्रकाशित

संपादकीय कार्यालय
प्रेरणा शोध संस्थान न्यास,
सी-56/20 सेक्टर-62, नोएडा - 201309
दूरभाष : 0120 4565851,
ईमेल : prernavichar@gmail.com
वेबसाइट : www.prernasamvad.in

इस पत्रिका में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। संपादक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। सभी विवादों का निपटारा नोएडा की सीमा में आने वाली सक्षम अदालतों/फोरम में मान्य होगा।

संपादक

इस अंक में

नया भारत खड़ा होकर रहेगा : भागवत-10

प्रधानमंत्री का 11 दिवसीय विशेष अनुष्ठान-12

राम मंदिर का शिल्प सौन्दर्य एवं तकनीकी -20

प्राण प्रतिष्ठा से विकास की नयी गाथा -24

हमारे राम आ गए.....05

एक तपस्वी राजर्षि प्राप्त होना हमारा सौभाग्य - स्वामी गोविंद देव गिरि महाराज.....09

पूरा राष्ट्र राममय : योगी आदित्यनाथ.....14

राममय दुनिया.....15

समरसता का संदेश देती अयोध्या.....16

श्रीराम का राष्ट्रावतार.....18

कक्करिसी नाटकम शिव-पार्वती का आख्यान.....23

साहित्य में राम.....26

कुटुंब प्रबोधन के प्रेरक श्रीराम.....28

प्रकृति का पर्व वसंत पंचमी.....30

विशेष समाचार.....32

क्या आप जानते हैं?.....33

हर दिन पावन.....34

रामलला संग 'स्व' की प्रतिष्ठा

अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा से एक बार पुन: राम के चरित्र, मूल्यों और समदर्शी दृष्टि की धारणाएं स्थापित होना शुरू हो रही हैं। इससे शासन-प्रशासन के साथ सामाजिक संगठन एवं आम जन भी राम और रामराज्य के पदचिह्नों और मानकों को अनुसरण करने को आतुर हैं। हां समय जरूर लगेगा लेकिन जैसे-जैसे सनातन मूल्यों की प्रतिष्ठा समाज में मजबूत होगी, वैसे-वैसे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और पर्यावरण आदि में 'स्व' के तत्व की पैठ गहरी होती जाएगी। जो राष्ट्र के साथ-साथ समस्त विश्व के लिए कल्याणकारी और मंगलकारी होगी।

रामलला की दिव्य आध्यात्मिक ऊर्जा के प्रभाव से अयोध्या समेत पूरे देश में एक नये युग का सूत्रपात हो चुका है। दिव्य और भव्य राम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा न केवल रामराज्य की स्थापना का उद्घोष है, बल्कि 'स्व' की स्थापना का उद्घाटन बिंदु भी है। रामायण और श्रीरामचरितमानस की एक नहीं, अनेक चौपाइयों में रामराज्य और स्व के दर्शन निहित हैं। 'स्व' ही था, जिसके संबल से भारत कभी विश्व गुरु था। कालांतर में स्व के तिरोहित होने से भारत के तंत्र से शक्ति भी क्षीण हो गई। परिणामस्वरूप संस्कृति, संस्कार, रणनीति, अर्थनीति और समावेशी राजनीति का अगुवा भारत पश्चिमी देशों के अंधानुकरण का आदी हो गया।

लेकिन काल चक्र बहुत बलशाली होता है। समय बदला, नेतृत्व बदला और शुरू हुआ नये भारत का नया दौर। फिर से देश को सक्षम और सनातन मूल्यों को धारण करने वाला नेतृत्व मिला। जिसने देश के प्राचीन स्वर्णिम अध्यायों की ताकत को पहचान कर उसे फिर से प्रतिष्ठित करने का संकल्प लिया। और यही संकल्प सतत संघर्ष, तप, बलिदान, अनुशासन और परिश्रम से आज सिद्धि में बदलकर समस्त विश्व में भारत की जय-जयकार का हेतु बना है। क्योंकि चाहे बात आध्यात्मिक विकास की हो या मानसिक विकास की या भौतिक विकास की, सभी के सूत्र हमारे सनातन संस्कृति में हैं। यही नहीं,सतत विकास का सार भी भारतीय संस्कृति और धर्म दर्शन में छिपा है। आज आधुनिक विश्व एवं विकसित देशों में प्रगति के सारे मानक मिलकर भी सुख और संतोष के लक्ष्य को पूरा करने में असमर्थ दिख रहे हैं। अपार सुख-सुविधा और सारे संसाधन अपर्याप्त साबित होकर असंतोष और युद्ध को जन्म दे रहे हैं। ऐसे में समस्त विश्व को अब नये विचार और मूल्यों की आवश्यकता महसूस हो रही है, तो वो मानव विकास के सरल तंत्र और दर्शन के लिए भारत की तरफ आशा भरी नजरों से देख रहे हैं। देखें भी क्यों न, क्योंकि हजारों साल पहले महर्षि वाल्मीकि ने त्रेतायुग में ही संपोषणीय विकास और सुसभ्य समाज के चरमोत्कर्ष की झलक दिखा दी थी। इसी तरह बाबा तुलसीदास ने भी रामराज्य का दिग्दर्शन रामचरितमानस की अनेक चौपाई में कराया है-

नहिं दरिद्र कोउ दुखी न दीना। नहिं कोउ अबुध न लच्छन हीना।।

सब नर करहिं परस्पर प्रीती। चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।।

आज संयुक्त राष्ट्र जिस सतत् विकास के लक्ष्यों को हासिल करने की बात कर रहा है। जिसमें गरीबी का अंत, शून्य भूख, स्वास्थ्य और कल्याण, पर्यावरण और सामाजिक लक्ष्य, शांति और न्याय आदि जैसे बिंदु हैं। जबकि संयुक्त राष्ट्र के लक्ष्यों से भी बेहतर विकास के लक्ष्य, मानक और उद्देश्य रामराज्य में दृष्टिगोचर होते हैं। उपरोक्त चौपाइयों में भी तत्कालीन सामाजिक, आर्थिक और पर्यावरणीय विकास की बेहद संतुलित स्थिति का वर्णन है। इसलिए अयोध्या में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा से एक बार पुन: राम के चरित्र, मूल्यों और समदर्शी दृष्टि की धारणाएं स्थापित होना शुरू हो रही हैं। इससे शासन-प्रशासन के साथ सामाजिक संगठन एवं आम जन भी राम और रामराज्य के पदचिन्हों और मानकों को अनुसरण करने को आतुर हैं। हां समय जरूर लगेगा, लेकिन जैसे-जैसे सनातन मूल्यों की प्रतिष्ठा समाज में मजबूत होगी, वैसे-वैसे सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और पर्यावरण आदि में 'स्व' के तत्व की पैठ गहरी होती जाएगी। यही विचारधारा जो राष्ट्र के साथ-साथ समस्त विश्व के लिए कल्याणकारी और मंगलकारी होगी। क्योंकि वसुधैव कुटुम्बकम भारत का ध्येय रहा है। निश्चित ही आने वाले समय में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा स्व के लिए वरदान सिद्ध होगी। क्योंकि राम नीति भी हैं। राम नित्यता भी हैं। राम निरंतरता भी हैं। राम विभु हैं, विशद हैं। राम व्यापक हैं, विश्व हैं और विश्वात्मा हैं।

हमारे राम आ गए

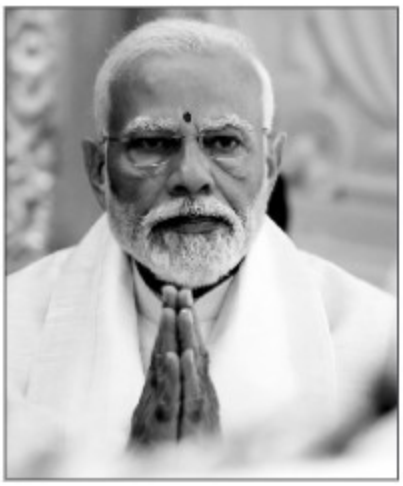

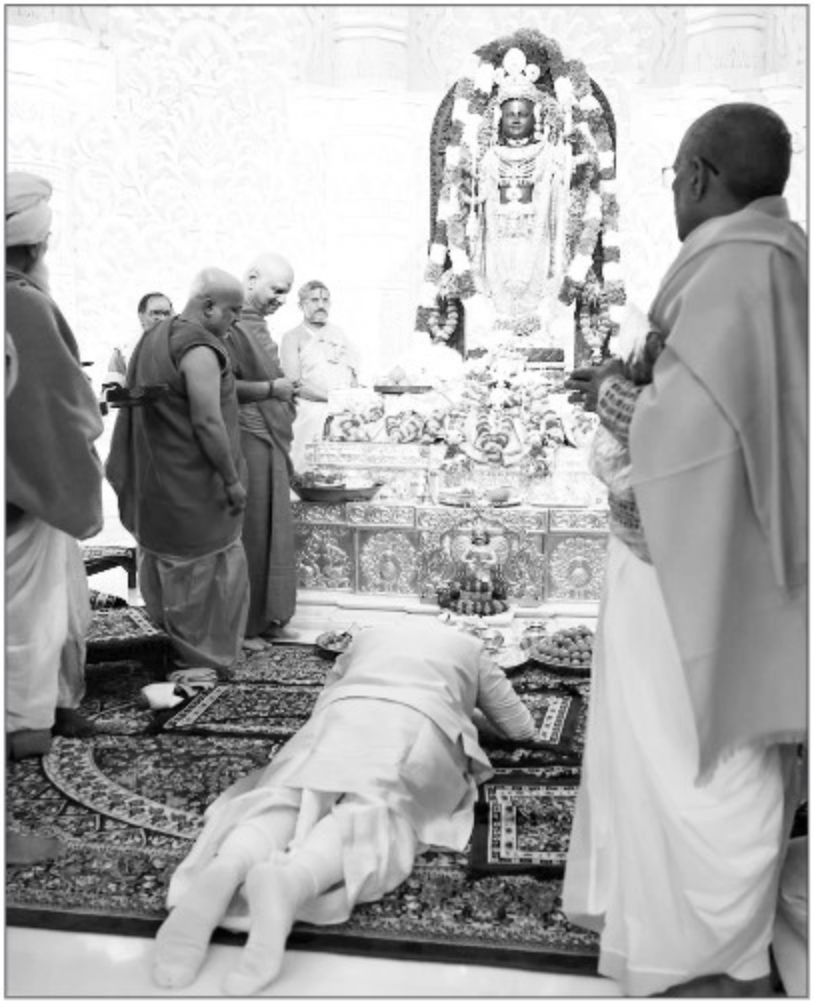

आज हमारे राम आ गए हैं! सदियों की प्रतीक्षा के बाद हमारे राम आ गए हैं। सदियों का अभूतपूर्व धैर्य, अनगिनत बलिदान, त्याग और तपस्या के बाद हमारे प्रभु राम आ गये हैं। हमारे रामलला अब टेंट में नहीं रहेंगे। हमारे रामलला अब इस दिव्य मंदिर में रहेंगे।

आज हमारे राम आ गए हैं! सदियों की प्रतीक्षा के बाद हमारे राम आ गए हैं। सदियों का अभूतपूर्व धैर्य, अनगिनत बलिदान, त्याग और तपस्या के बाद हमारे प्रभु राम आ गये हैं। ये कथन है अयोध्या में श्री राम लला की प्राण-प्रतिष्ठा के अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का। उन्होंने कहा कि मैं गर्भगृह में ईश्वरीय चेतना का साक्षी बनकर आपके सामने उपस्थित हुआ हूं। कितना कुछ कहने को है... लेकिन कंठ अवरुद्ध है। मेरा शरीर अभी भी स्पंदित है, चित्त अभी भी उस पल में लीन है। हमारे रामलला अब टेंट में नहीं रहेंगे। हमारे रामलला अब इस दिव्य मंदिर में रहेंगे। मेरा पक्का विश्वास है, अपार श्रद्धा है कि जो घटित हुआ है इसकी अनुभूति, देश के, विश्व के, कोने-कोने में राम भक्तों को हो रही होगी। ये क्षण अलौकिक है। ये पल पवित्रतम है। ये माहौल, ये वातावरण, ये ऊर्जा, ये घड़ी... प्रभु श्रीराम का हम सब पर आशीर्वाद है। 22 जनवरी का ये सूरज एक अद्भुत आभा लेकर आया है। 22 जनवरी, 2024 की ये कैलेंडर पर लिखी एक तारीख नहीं। ये एक नए कालचक्र का उद्गम है। राम मंदिर के भूमिपूजन के बाद से प्रतिदिन पूरे देश में उमंग और उत्साह बढ़ता ही जा रहा था। निर्माण कार्य देख, देशवासियों में हर दिन एक नया विश्वास पैदा हो रहा है। हमें सदियों के उस धैर्य की धरोहर मिली है, हमें श्रीराम का मंदिर मिला है। गुलामी की मानसिकता को तोड़कर उठ खड़ा हो रहा राष्ट्र, अतीत के हर दंश से

हौसला लेता हुआ राष्ट्र, ऐसे ही नव इतिहास का सृजन करता है। आज से हजार साल बाद भी लोग आज की इस तारीख की, इस पल की चर्चा करेंगे। और ये कितनी बड़ी रामकृपा है कि हम इस पल को जी रहे हैं, इसे साक्षात घटित होते देख रहे हैं। दिन-दिशाएं... दिग-दिगंत... सब दिव्यता से परिपूर्ण हैं। ये समय, सामान्य समय नहीं है। ये काल के चक्र पर सर्वकालिक स्याही से अंकित हो रहीं अमिट स्मृति रेखाएं हैं।

पीएम ने कहा कि मैं आज प्रभु श्रीराम से क्षमा याचना भी करता हूं। हमारे पुरुषार्थ, हमारे त्याग, तपस्या में कुछ तो कमी रह गयी होगी कि हम इतनी सदियों तक ये कार्य कर नहीं पाए। आज वो कमी पूरी हुई है। मुझे विश्वास है, प्रभु राम हमें अवश्य क्षमा करेंगे। संबोधन के क्रम में प्रधानमंत्री ने कहा कि त्रेता में राम आगमन पर तुलसीदास जी ने लिखा है- प्रभु बिलोकि हरषे पुरबासी। जनित वियोग बिपति सब नासी। अर्थात्, प्रभु का आगमन देखकर ही सब अयोध्यावासी, समग्र देशवासी हर्ष से भर गए। लंबे वियोग से जो आपत्ति आई थी, उसका अंत हो गया। उस कालखंड में तो वो वियोग केवल 14 वर्षों का था, तब भी इतना असह्य था। इस युग में तो अयोध्या और देशवासियों ने सैकड़ों वर्षों का वियोग सहा है। हमारी कई-कई पीढ़ियों ने वियोग सहा है। भारत के तो संविधान में, उसकी पहली प्रति में, भगवान राम विराजमान हैं। संविधान के अस्तित्व में आने के बाद भी दशकों तक प्रभु श्रीराम के अस्तित्व को लेकर कानूनी लड़ाई चली। मैं आभार व्यक्त करूंगा भारत की न्यायपालिका का, जिसने न्याय की लाज रख ली। न्याय के पर्याय प्रभु राम का मंदिर भी न्याय बद्ध तरीके से ही बना।

आज गांव-गांव में एक साथ कीर्तन, संकीर्तन हो रहे हैं। मंदिरों में उत्सव हो रहे हैं, स्वच्छता अभियान चलाए जा रहे हैं। सागर से सरयू तक, हर जगह राम नाम का वही उत्सव भाव छाया हुआ है। प्रभु राम तो भारत की आत्मा के कण-कण से जुड़े हुए हैं। राम, भारतवासियों के अंतर्मन में विराजे हुए हैं। हम भारत में कहीं भी, किसी की अंतरात्मा को छुएंगे तो इस एकत्व की अनुभूति होगी, और यही भाव सब जगह मिलेगा। इससे उत्कृष्ट, इससे अधिक, देश को समायोजित करने वाला सूत्र और क्या हो सकता है? मुझे देश के कोने-कोने में अलग-अलग भाषाओं में रामायण सुनने का अवसर मिला है, लेकिन विशेषकर पिछले 11 दिनों में रामायण अलग-अलग भाषा में, अलग-अलग राज्यों से मुझे विशेष रूप से सुनने का सौभाग्य मिला। राम को परिभाषित करते हुये ऋषियों ने कहा है- रमन्ते यस्मिन् इति रामः।। अर्थात् जिसमें रम जाया जाए,

हमारे देश ने इतिहास की इस गांठ को जिस गंभीरता और भावुकता के साथ खोला है, वह ये बताती है कि हमारा भविष्य हमारे अतीत से बहुत सुंदर होने जा रहा है।

वही राम है। राम लोक की स्मृतियों में, पर्व से लेकर परम्पराओं में, सर्वत्र समाये हुए हैं। हर युग में लोगों ने राम को जिया है। हर युग में लोगों ने अपने-अपने शब्दों में, अपनी-अपनी तरह से राम को अभिव्यक्त किया है। और ये रामरस, जीवन प्रवाह की तरह निरंतर बहता रहता है। प्राचीन काल से भारत के हर कोने के लोग रामरस का आचमन करते रहे हैं। रामकथा असीम है, रामायण भी अनंत हैं। राम के आदर्श, राम के मूल्य, राम की शिक्षाएं, सब जगह एक समान हैं।

प्रधानमंत्री मोदी ने कहा कि इस ऐतिहासिक समय में देश उन व्यक्तित्वों को भी याद कर रहा है, जिनके कार्यों और समर्पण की वजह से आज हम ये शुभ दिन देख रहे हैं। राम के इस काम में कितने ही लोगों ने त्याग और तपस्या की पराकाष्ठा करके दिखाई है। उन अनगिनत राम भक्तों के, उन अनगिनत कारसेवकों के और उन अनगिनत संत महात्माओं के हम सब ऋणी हैं। ये अवसर उत्सव का क्षण तो है ही, लेकिन इसके साथ ही ये क्षण भारतीय समाज की परिपक्वता के बोध का क्षण भी है। हमारे लिए ये अवसर सिर्फ विजय का नहीं, विनय का भी है। दुनिया का इतिहास साक्षी है कि कई राष्ट्र अपने ही इतिहास में उलझ जाते हैं। ऐसे देशों ने जब भी अपने इतिहास की उलझी हुई गांठों को खोलने का प्रयास किया, उन्हें सफलता पाने में बहुत कठिनाई आई। बल्कि कई बार तो पहले से ज्यादा मुश्किल परिस्थितियां बन गईं। लेकिन हमारे देश ने इतिहास की इस गांठ को जिस गंभीरता और भावुकता के साथ खोला है, वह ये बताती है कि हमारा भविष्य हमारे अतीत से बहुत सुंदर होने जा रहा है। वह भी एक समय था, जब कुछ लोग कहते थे कि राम मंदिर बना तो आग लग जाएगी। ऐसे लोग भारत के सामाजिक भाव की पवित्रता को नहीं जान पाए। रामलला के इस मंदिर का निर्माण, भारतीय समाज के शांति, धैर्य, आपसी सद्भाव और समन्वय का भी प्रतीक है। हम देख रहे हैं, ये निर्माण किसी आग को नहीं, बल्कि ऊर्जा को जन्म दे रहा है। राम मंदिर समाज के हर वर्ग को एक उज्ज्वल भविष्य के पथ पर बढ़ने की प्रेरणा लेकर आया है। मैं इस अवसर पर उन लोगों से आह्वान करूंगा... आईये, आप महसूस कीजिए, अपनी सोच पर पुनर्विचार कीजिए। राम आग नहीं है, राम ऊर्जा हैं। राम विवाद नहीं, राम समाधान हैं। राम सिर्फ हमारे नहीं हैं, राम तो सबके हैं। राम वर्तमान ही नहीं, राम अनंतकाल हैं।

जिस तरह राममंदिर प्राण प्रतिष्ठा के इस आयोजन से पूरा विश्व जुड़ा, उसमें राम की सर्वव्यापकता के दर्शन हो रहे हैं। जैसा उत्सव भारत में है, वैसा ही अनेक देशों में है। प्राण

प्रतिष्ठा का ये उत्सव रामायण की उन वैश्विक परम्पराओं का भी उत्सव बना है। रामलला की ये प्रतिष्ठा 'वसुधैव कुटुंबकम्' के विचार की भी प्रतिष्ठा है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि अयोध्या में, केवल श्री राम के विग्रह रूप की प्राण प्रतिष्ठा नहीं हुई है। ये श्रीराम के रूप में साक्षात् भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट विश्वास की भी प्राण प्रतिष्ठा है। ये साक्षात् मानवीय मूल्यों और सर्वोच्च आदर्शों की भी प्राण प्रतिष्ठा है। इन मूल्यों की, इन आदर्शों की आवश्यकता आज सम्पूर्ण विश्व को है। सर्वे भवन्तु सुखिनः ये संकल्प हम सदियों से दोहराते आए हैं। उसी संकल्प को राम मंदिर के रूप में साक्षात् आकार मिला है। ये मंदिर, मात्र एक देव मंदिर नहीं है। ये भारत की दृष्टि का, भारत के दर्शन का, भारत के दिग्दर्शन का मंदिर है। ये राम के रूप में राष्ट्र चेतना का मंदिर है। राम भारत की आस्था हैं, राम भारत का आधार हैं। राम भारत का विचार हैं, राम भारत का विधान हैं। राम भारत की चेतना हैं, राम भारत का चिंतन हैं। राम भारत की प्रतिष्ठा हैं, राम भारत का प्रताप हैं। राम प्रवाह हैं, राम प्रभाव हैं। राम नेति भी हैं। राम नीति भी हैं। राम नित्यता भी हैं। राम निरंतरता भी हैं। राम विभु हैं, विशद हैं। राम व्यापक हैं, विश्व हैं, विश्वात्मा हैं। और इसलिए, जब राम की प्रतिष्ठा होती है, तो उसका प्रभाव वर्षों या शताब्दियों तक ही नहीं होता। उसका प्रभाव हजारों वर्षों के लिए होता है। महर्षि वाल्मीकि ने कहा है- राज्यम् दश सहस्राणि प्राप्य वर्षाणि राघवः। अर्थात, राम दस हजार वर्षों के लिए राज्य पर प्रतिष्ठित हुए। यानी हजारों वर्षों के लिए रामराज्य स्थापित हुआ। जब त्रेता में राम आए थे, तब हजारों वर्षों के लिए रामराज्य की स्थापना हुई थी। हजारों वर्षों तक राम विश्व पथ प्रदर्शन करते रहे थे।

उन्होंने आगे कहा कि अयोध्या भूमि हम सभी से, प्रत्येक रामभक्त से, प्रत्येक भारतीय से कुछ सवाल कर रही है। श्रीराम का भव्य मंदिर तो बन गया...अब आगे क्या? सदियों का इंतजार तो खत्म हो गया...अब आगे क्या? इस अवसर पर जो दैव, जो दैवीय आत्माएं हमें आशीर्वाद देने के लिए उपस्थित हुई हैं, हमें देख रही हैं, उन्हें क्या हम ऐसे ही विदा करेंगे? नहीं, कदापि नहीं। मैं पूरे पवित्र मन से महसूस कर रहा हूं कि कालचक्र बदल रहा है। ये सुखद संयोग है कि हमारी पीढ़ी को एक कालजयी पथ के शिल्पकार के रूप में चुना गया है। हज़ार वर्ष बाद की पीढ़ी, राष्ट्र निर्माण के हमारे आज के कार्यों को याद करेगी। इसलिए मैं कहता हूं- यही समय है, सही समय है। हमें आज से, इस पवित्र समय से, अगले एक हजार साल के भारत की नींव रखनी है। मंदिर निर्माण से आगे बढ़कर अब हम सभी देशवासी, यहीं इस पल से समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत के निर्माण की सौगंध लेते हैं। राम के विचार, 'मानस के साथ ही जनमानस' में भी हों, यही राष्ट्र

ये भव्य राम मंदिर साक्षी बनेगा- भारत के उत्कर्ष का, भारत के उदय का, ये भव्य राम मंदिर साक्षी बनेगा- भव्य भारत के अभ्युदय का, विकसित भारत का। ये मंदिर सिखाता है कि अगर लक्ष्य, सत्य प्रमाणित हो, अगर लक्ष्य, सामूहिकता और संगठित शक्ति से जन्मा हो, तब उस लक्ष्य को प्राप्त करना असंभव नहीं है।

निर्माण की सीढ़ी है।

आज के युग की मांग है कि हमें अपने अंतःकरण को विस्तार देना होगा। हमारी चेतना का विस्तार... देव से देश तक, राम से राष्ट्र तक होना चाहिए। हनुमान जी की भक्ति, हनुमान जी की सेवा, हनुमान जी का समर्पण, ये ऐसे गुण हैं जिन्हें हमें बाहर नहीं खोजना पड़ता। प्रत्येक भारतीय में भक्ति, सेवा और समर्पण के ये भाव, समर्थ-सक्षम,भव्य-दिव्य भारत का आधार बनेंगे। और यही तो है देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार ! दूर-सुदूर जंगल में कुटिया में जीवन गुजारने वाली मेरी आदिवासी मां शबरी का ध्यान आते ही, अप्रतिम विश्वास जागृत होता है। मां शबरी तो कबसे कहती थीं- राम आएंगे। प्रत्येक भारतीय में जन्मा यही विश्वास, समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत का आधार बनेगा। और यही तो है देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार! हम सब जानते हैं कि निषादराज की मित्रता, सभी बंधनों से परे है। निषादराज का राम के प्रति सम्मोहन, प्रभु राम का निषादराज के लिए अपनापन कितना मौलिक है। सब अपने हैं, सभी समान हैं। प्रत्येक भारतीय में अपनत्व की, बंधुत्व की ये भावना, समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत का आधार बनेगी। और यही तो है देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार।

आज देश में निराशा के लिए रत्ती भर भी स्थान नहीं है। मैं तो बहुत सामान्य हूं, मैं तो बहुत छोटा हूं, अगर कोई ये सोचता है, तो उसे गिलहरी के योगदान को याद करना चाहिए। गिलहरी का स्मरण ही हमें हमारी इस हिचक को दूर करेगा, हमें सिखाएगा कि छोटे-बड़े हर प्रयास की अपनी ताकत होती है, अपना योगदान होता है। और सबके प्रयास की यही भावना, समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत का आधार बनेगी। और यही तो है देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार!

पीएम ने कहा कि लंकापति रावण, प्रकांड ज्ञानी थे, अपार शक्ति के धनी थे। लेकिन जटायु जी की मूल्य निष्ठा देखिए, वे महाबली रावण से भिड़ गए। उन्हें भी पता था कि वो रावण को परास्त नहीं कर पाएंगे। लेकिन फिर भी उन्होंने रावण को चुनौती दी। कर्तव्य की यही पराकाष्ठा समर्थ-सक्षम, भव्य-दिव्य भारत का आधार है। और यही तो है, देव से देश और राम से राष्ट्र की चेतना का विस्तार।

ये राम के रूप में राष्ट्र चेतना का मंदिर है। राम भारत की आस्था हैं, राम भारत का आधार हैं। राम भारत का विचार हैं, राम भारत का विधान हैं। राम भारत की चेतना हैं, राम भारत का चिंतन हैं। राम भारत की प्रतिष्ठा हैं, राम भारत का प्रताप हैं। राम प्रवाह हैं, राम प्रभाव हैं। राम नेति भी हैं। राम नीति भी हैं। राम नित्यता भी हैं। राम निरंतरता भी हैं। राम विभु हैं, विशद हैं। राम व्यापक हैं, विश्व हैं, विश्वात्मा हैं। और इसलिए, जब राम की प्रतिष्ठा होती है, तो उसका प्रभाव वर्षों या शताब्दियों तक ही नहीं होता। उसका प्रभाव हजारों वर्षों के लिए होता है।

आइए, हम संकल्प लें कि राष्ट्र निर्माण के लिए हम अपने जीवन का पल-पल लगा देंगे। रामकाज से राष्ट्रकाज, समय का पल-पल, शरीर का कण-कण, राम समर्पण को राष्ट्र समर्पण के ध्येय से जोड़ देंगे। प्रभु श्रीराम की हमारी पूजा, विशेष होनी चाहिए। ये पूजा, स्व से ऊपर उठकर समष्टि के लिए होनी चाहिए। ये पूजा, अहम से उठकर वयम के लिए होनी चाहिए। प्रभु को जो भोग चढ़ेगा, वो विकसित भारत के लिए हमारे परिश्रम की पराकाष्ठा का प्रसाद भी होगा। हमें नित्य पराक्रम, पुरुषार्थ, समर्पण का प्रसाद प्रभु राम को चढ़ाना होगा। इनसे नित्य प्रभु राम की पूजा करनी होगी, तब हम भारत को वैभवशाली और विकसित बना पाएंगे।

संबोधन के क्रम में आगे कहा कि ये भारत के विकास का अमृतकाल है। आज भारत युवा शक्ति की पूंजी से भरा हुआ है, ऊर्जा से भरा हुआ है। ऐसी सकारात्मक परिस्थितियां, फिर ना जाने कितने समय बाद बनेंगी। हमें अब चूकना नहीं है, हमें अब बैठना नहीं है। मैं अपने देश के युवाओं से कहूंगा। आपके सामने हजारों वर्षों की परंपरा की प्रेरणा है। आप भारत की उस पीढ़ी का प्रतिनिधित्व करते हैं...जो चांद पर तिरंगा लहरा रही है, जो 15 लाख किलोमीटर की यात्रा करके, सूर्य के पास जाकर मिशन आदित्य को सफल बना रही है, जो आसमान में तेजस... सागर में विक्रांत...का परचम लहरा रही है। अपनी विरासत पर गर्व करते हुए आपको भारत का नव प्रभात लिखना है। परंपरा की पवित्रता और आधुनिकता की अनंतता, दोनों ही पथ पर चलते हुए भारत, समृद्धि के लक्ष्य तक पहुंचेगा। आने वाला समय अब सफलता का है। आने वाला समय अब सिद्धि का है। ये भव्य राम मंदिर साक्षी बनेगा- भारत के उत्कर्ष का, भारत के उदय का, ये भव्य राम मंदिर साक्षी बनेगा- भव्य भारत के अभ्युदय का, विकसित भारत का! ये मंदिर सिखाता है कि अगर लक्ष्य, सत्य प्रमाणित हो, अगर लक्ष्य, सामूहिकता और संगठित शक्ति से जन्मा हो, तब उस लक्ष्य को प्राप्त करना असंभव नहीं है। ये भारत का समय है और भारत अब आगे बढ़ने वाला है। शताब्दियों की प्रतीक्षा के बाद हम यहां पहुंचे हैं। हम सब ने इस युग का, इस कालखंड का इंतजार किया है। अब हम रुकेंगे नहीं। हम विकास की ऊंचाई पर जाकर ही रहेंगे। इसी भाव के साथ रामलला के चरणों में प्रणाम करते हुए आप सभी को बहुत बहुत शुभकामनाएं। ■

एक तपस्वी राजर्षि प्राप्त होना हमारा सौभाग्य - स्वामी गोविंद देव गिरि महाराज

आपदामपहर्तारं दातारां सर्वसम्पदाम्
लोकाभिरामं श्रीरामं भूयो-भूयो नामाम्यहम्।।

यह क्षण अत्यंत उल्लास से, समाधान से और कृतज्ञता से भरा हुआ है। हमारा संपूर्ण राष्ट्र और पूरा विश्व भी भगवान श्री राम की प्रतिष्ठा से आलोकित होने का पर्व आरंभ हो चुका है। यह केवल एक मंदिर में एक मूर्ति की प्रतिष्ठा नहीं है। यह इस देश की अस्मिता, इस देश का स्वाभिमान और इस देश का आत्मविश्वास, इसकी प्रतीक्षा, 500 वर्षों की प्रतीक्षा के पश्चात यह संभव हो सका। यह संबोधन हैं स्वामी गोविंद देव गिरि महाराज के। उन्होंने कहा कि अनेक कारण मिलते-मिलते आखिर वे एक विशिष्ट स्तर तक पहुंच जाते हैं और उस स्तर पर कोई महापुरुष हम लोगों को उपलब्ध होता है। उस विभूति के कारण युग परिवर्तित हो जाता है। इस प्रकार का परिवर्तन लाने के लिए अपने जीवन को साधना पड़ता है। और इस प्रकार जीवन साधने वाले इस देश की परंपरा के अनेक महान रत्नों में आज हम लोगों को समय की आवश्यकता, युग की आवश्यकता, सनातन के अंतःकरण की आवश्यकता के रूप में हमारे प्रधानमंत्री जी प्राप्त हुए हैं। यह केवल इस देश का नहीं यह संपूर्ण विश्व का सौभाग्य है कि आज एक ऐसा राजर्षि हम लोगों को प्राप्त हुआ। मुझे इस बात का आश्चर्य हुआ, जब मुझे प्राण प्रतिष्ठा से पहले समाचार मिले कि प्रधानमंत्री को इस प्रतिष्ठा के लिए, स्वयं अपने लिए क्या-क्या अनुष्ठान करके सिद्ध करना चाहिए। स्वयं को उसकी नियमावली आप लिख करके भेजें। जिस प्रकार का हमारे देश का राजनीतिक माहौल है कोई भी आकर किसी भी समय कुछ भी कर्म करके चला जाता है। उद्घाटन हो, पौधारोपण हो चाहे कुछ भी हो। लेकिन उसके लिए मैं अपने को सिद्ध करूं इस प्रकार की भावना कहां होती है? यदि किसी ने पूछा तो मैं कहूंगा कि यहां (प्रधानमंत्री) है। भगवान श्री राम की प्रतिष्ठा करनी है। भारतीय जीवन आदर्शों के सर्वोच्च आदर्श भगवान श्री राम हैं और इन समस्त जीवन आदर्शों की प्रतिष्ठा करने के समान ही यहां की प्रतिष्ठा रही है। इसलिए एक महान विभूति को ऐसे लगा कि मैं अपने को भी साधूं। मैं कर्मणा, मनसा, वाचा। कर्म से, मन से और वाणी से अपने को उसके लिए शुद्ध बनाऊं, सिद्ध बनाऊं और उसका मार्ग तप ही है।

भगवत गीता ने कहा यज्ञदानतपः कर्म न त्याज्यं कार्यमेव तत्। तप से ही विशेष परिशुद्धि होती है। मुझे आपको बताते समय अंतःकरण गदगद होने की अनुभूति हो रही है। मैंने तो कहा था हम लोगों ने महापुरुषों से परामर्श करके लिखा था कि आपको केवल तीन दिन का

उपवास करना है, आपने 11 दिन का संपूर्ण उपोषण किया। हमने 11 दिन एक मुक्त रहने के लिए कहा था। उन्होने अन्न का ही त्याग कर दिया। महाभारत में कहा गया है अनशन सबसे बड़ा तप है और उसको उनके जीवन में साकार होते हुए मैंने केवल देखा ही नहीं, बल्कि मैं थोड़ा तार्किक हूं आपकी परम पूजनीय माता जी से मिलकर मैंने उसको रिकंफर्म भी किया था कि आप का यह अभ्यास 40 वर्षों का है। ऐसा तपस्वी कोई राष्ट्रीय नेता प्राप्त होना यह सामान्य बात नहीं है। इन दिनों में हमने कहा था कि आपको विदेश प्रवास नहीं करना चाहिए, क्योंकि सांसर्गिक दोष भी आते हैं। आपने विदेश प्रवास टाल दिया। लेकिन दिव्य स्थानों का प्रवास ऐसा किया कि नासिक से आरंभ किया गुरुवायुर गए, श्रीरंगम गए, रामेश्वरम गए। इन सारे स्थानों पर जाकर वहां के परमाणुओं को लेकर और पूरी भारत माता के हर कोनों में जाकर मानो वे निमंत्रण दे रहे थे कि आइए दिव्य आत्माओं, अयोध्या पधारिए और हमारे राष्ट्र को महान बनाने के लिए आशीर्वाद दीजिए। हमने केवल कहा था तीन दिनों तक आपको भूमि शयन करना चाहिए। 11 दिनों से आप भूमि पर शयन कर रहे हैं। मित्रों, ब्रह्माजी ने सृष्टि का निर्माण किया। उस समय उन्होंने एक शब्द को सुना था भारत की संस्कृति का सबसे मूल शब्द है तपतप इति। हमारे पूज्य गुरुदेव के गुरुदेव परम गुरु कहा करते थे कांची के परमाचार्यजी महाराज मैं जब भी उनसे मिलता था वे कहते थे तपश्चर्या। आज तप की कमी हो गई है। उस तप को हमने साकार आप में देखा। मुझे इस परंपरा को देखते हुए केवल एक राजा याद आता है जिसमें यह सब कुछ था। उस राजा का नाम था छत्रपति शिवाजी महाराज। मित्र लोगों को पता नहीं है, शायद स्वयं मल्लिकार्जुन के दर्शन के लिए श्री शैलम के ऊपर गए। तीन दिन का उपवास किया। तीन दिन शिव मंदिर में रहे और महाराज ने कहा कि मुझे राज्य नहीं करना है, मुझे संन्यास लेना है। मैं शिवजी की आराधना के लिए जन्मा हूं। मुझे संन्यास लेना है, मुझे वापस मत ले जाइए। इतिहास का वह बड़ा विलक्षण प्रसंग है। उस प्रसंग में उनके सारे जेष्ठ मंत्रियों ने उनको समझाया और लौटाकर लाये। यह भी आपका कार्य भगवत सेवा ही है। आज हम लोगों को उसी प्रकार के एक महापुरुष ऐसे प्राप्त हुए हैं, जिसको भगवती जगदंबा ने स्वयं हिमालय से लौटा करके भेज दिया कि जाओ भारत माता की सेवा करो। तुम्हे भारत माता की सेवा करनी है। ऐसा एक स्थान हम लोगों को उच्च पदस्थ राजर्षि ने जब दिखाया, तो मुझे छत्रपति शिवाजी महाराज के गुरु समर्थ रामदास स्वामी महाराज की याद आ गई। उन्होंने शिवाजी का वर्णन किया निश्चयाचा महामेरू बहुत जनासी आधारू अखंड स्थितीचा निर्धारु श्रीमंत योगी। हम लोगों को आज एक श्रीमंत योगी प्राप्त हुए। ■

नया भारत खड़ा होकर रहेगा : भागवत

अयोध्या में 22 जनवरी को भगवान रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने संबोधन में कहा कि यह आनंद शब्दों में वर्णनातीत है और उसके वर्णन करने का प्रयास इसके पहले के वक्तव्यों में अच्छा हो गया। यह भी बता दिया गया है और हम जानते भी हैं कि आज अयोध्या में रामलला के साथ भारत का स्व लौट आया है। और संपूर्ण विश्व को त्रासदी से राहत देने वाला एक नया भारत खड़ा होकर रहेगा। इसका प्रतीक यह कार्यक्रम बन गया है। ऐसे समय में आपके उत्साह का, आपके आनंद का वर्णन कोई नहीं कर सकता। हम यहां पर अनुभव कर रहे हैं कि देशभर में भी यही वातावरण है। छोटे-छोटे मंदिर के सामने दूरदर्शन पर इस कार्यक्रम को सुनने वाले हमारे समाज के करोड़ों बंधु वहां पहुंच ना पाए ऐसे घर-घर के हमारे नागरिक, सज्जन, माता, भगिनी सब भावविभोर हैं। सब में आनंद है सब में उत्साह है और ऐसे समय में जोश की बातों में थोड़ी सी होश की बात करने का काम मुझे ही दिया जाता है। आज हमने सुना कि इस प्राण प्रतिष्ठा महोत्सव में पधारने के पूर्व प्रधानमंत्री जी ने कठोर व्रत रखा। जितना कठोर व्रत रखने को कहा था उससे कई गुना अधिक कठोर व्रताचरण उन्होंने किया।

मेरा पुराना उनसे परिचय है, मैं जानता हूं वह तपस्वी हैं ही, परंतु वह अकेले तप कर रहे हैं, हम क्या करेंगे? अयोध्या में रामलला आए हैं, अयोध्या से बाहर क्यों गए थे? क्योंकि अयोध्या में कलह हुआ। अयोध्या उस पुरी का नाम है जिसमें कोई द्वंद नहीं, जिसमें कोई कलह नहीं, जिसमें कोई दुविधा नहीं। वह हुआ 14 वर्ष वनवास में गए। वह सब ठीक होने के बाद दुनिया की कलह मिटाकर वापस आए। आज रामलला वापस फिर से आए हैं 500 साल के बाद। जिनके त्याग, तपस्या, प्रयासों से यह सोने का दिन आज हम देख रहें, सुवर्ण दिवस देख रहे हैं, उनका स्मरण प्राण प्रतिष्ठा के संकल्प में हम लोगों ने कहा आपने सुना होगा। स्मरण किया उनकी तपस्या को, उनके त्याग को, उनके परिश्रम को शत बार, सहस्त्र बार, कोटि बार नमन है। रामलला के यहां इस युग में आज के दिन फिर वापस आने का इतिहास जो-जो श्रवण करेगा, वह राष्ट्र के लिए कर्म प्रवण होगा और उसके राष्ट्र का सब दुख दैन्य हरण होगा ऐसे इस इतिहास का सामर्थ्य है। परंतु उसमें हमारे लिए कर्तव्य का आदेश भी है। प्रधानमंत्री जी ने तप किया अब हमको भी तप करना है। राम राज्य आने वाला है वो कैसा था-

दैहिक दैविक भौतिक तापा।
राम राज नहिं कहुहि व्यापा।।
सब नर करहिं परस्पर प्रीती।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति नीती।।
सब निर्दध धर्मरत पुनी।
नर अरु नारि चतुर सब गुनी।।
सब गुनग्य पंडित सब ग्यानी।
सब कृतज्ञ नहिं कपट सयानी।।

संघ प्रमुख ने कहा कि राज्य के सामान्य नागरिकों का जो वर्णन है हम भी इस गौरव मय भारतवर्ष की संताने हैं। कोटि-कोटि कंठ उसका जयगान करने वाले हमारे हैं। हमको इस प्रकार के व्यवहार को रखने का तप आचरण करना पड़ेगा। हमको भी सारे कलह को विदाई देनी पड़ेगी। छोटे-छोटे परस्पर मत रहते हैं। छोटे-छोटे विवाद रहते हैं। उसको लेकर लड़ाई करने की आदत छोड़ देनी पड़ेगी। आखिर है क्या, यह बात बताई वह सामान्य नागरिक कैसे थे। निर्दंभ, प्रामाणिकता से आचरण करने वाले केवल बातें करने वाले नहीं और बातें करके उसका अहंकार पालने वाले नहीं थे। काम करते थे आचरण करते थे और अहंकार नहीं था।

ऐसे वह थे और धर्मरत थे यानि क्या थे? इस पर कठिन भाषा में प्रवचन बहुत लंबा हो सकता है, लेकिन थोड़े में धर्म के जो चार मूल्य जिनकी चौखट पर धर्म है ऐसा श्रीमद् भागवत में बताया है सत्य, करुणा, शुचिता और तपस उसका आज हमारे लिए युगानुकूल आचरण

क्या है, तो सत्य कहता है कि सब घटों में राम हैं ब्रह्म सत्य है, वही सर्वत्र हैं, तो हमको यह जानकर आपस में समन्वय से चलना होगा। क्योंकि हम चलते हैं सबके लिए चलते हैं, सब हमारे हैं इसलिए हम चल पाते हैं और इसलिए आपस में समन्वय रखकर व्यवहार करना यह धर्म का पहला आचरण है। करुणा दूसरा कदम है उसका आचरण है सेवा और परोपकार। सरकार की कई योजनाएं गरीबों को राहत दे रही हैं सब हो रहा है, लेकिन हमारा भी कर्तव्य है यह सब समाज बांधव हमारे अपने बंधु हैं, तो जहां हमको दुख दिखता है, पीड़ा दिखती है वहां हम दौड़ जाएं। सेवा करें दोनों हाथों से कमाएं। अपने लिए न्यूनतम आवश्यक रखकर बाकी सारा वापस दें सेवा और परोपकार के माध्यम से। यह करुणा का अर्थ आज है। शुचिता पर चलना है यानी पवित्रता होनी चाहिए। पवित्रता के लिए संयम चाहिए। अपने को रोकना है सब अपनी इच्छा है सब अपने मत सब अपनी बातें ठीक होंगी ही ऐसा नहीं और होगी तो भी अन्यों के भी मत हैं। अन्यों की भी इच्छाएं हैं और इसलिए अपने आप को संयम में रखते हैं, तो सारी पृथ्वी, सब मानवों को जीवित रखेगी। गांधी जी कहते थे "द वर्ड हैज एनफ फॉर एवरीवन नीड, बट नाट एनफ फॉर एवरीवन ग्रीड।" तो लोभ नहीं करना, संयम में रहना और अनुशासन का पालन करना। अपने जीवन में अनुशासित रहना। अपने कुटुंब में, अपने समाज में और सामाजिक जीवन में नागरिक अनुशासन का पालन करना।

भगिनी निवेदिता कहती थीं कि स्वतंत्र देश में नागरिक संवेदना रखना और नागरिक अनुशासन का पालन करना, यही देश भक्ति का रूप है। इससे जीवन में पवित्रता आती है और तपस का तो मूर्तिमान उदाहरण आपके सामने दिया गया। व्यक्तिगत तपस तो हम करेंगे। सामूहिक तपस क्या है - संगच्छध्वं संवदध्वं सं वो मनांसि जानताम्। हम साथ चलेंगे, बोलेंगे आपस में, उसमें से एक सहमति का संवाद निकालेंगे। एक ही भाषा बोलेंगे। वो वाणी, मन, वचन, कर्म समन्वित होगा और मिलकर चलेंगे। अपने देश को विश्व गुरु बनाएंगे। यह तपस हम सबको करना है। 500 वर्षों तक अनेक पीढ़ियों ने लगकर परिश्रम करके प्राणों का बलिदान देकर खूनपसीना बहाकर आज यह आनंद का दिन सारे राष्ट्र को उपलब्ध करा दिया। उन सबके प्रति हमारे मन में कृतज्ञता है। मैं यहां बैठता हूं तो मेरे मन में विचार आता है कि मुझे बिठा दिया, मैंने क्या किया? वह तो किया उन्होंने किया, उसका प्रतिनिधि भी मुझे बनाया गया है। उस प्रतिनिधि के नाते मैं यह अवदान स्वीकार करता हूं और उन्हीं को अर्पण करता हूं। परंतु उनका यह व्रत हमको आगे लेकर जाना है जिस धर्म स्थापना विश्व में करने के लिए राम का अवतार हुआ था उस धर्म स्थापना को अनुकूल स्थिति अपने आचरण में अपने देश में उत्पन्न करना।

यह अपना कर्तव्य बनता है रामलला आए हैं हमारे मन को अह्लादित करने के लिए, उत्साही करने के लिए, प्रेरणा देने के लिए, साथ-साथ इस कर्तव्य की याद दिलाकर उसमें कृति प्रवण करने केलिए आए हैं। उनका आदेश सर पर लेकर हम यहां से जाएं। सब लोग तो यहां आ नहीं सके, लेकिन वो सुन रहे हैं, देख रहे हैं। अभी इसी क्षण से इस व्रत का पालन हम करेंगे, तो मंदिर निर्माण पूरे होते होते विश्व गुरु भारत का निर्माण भी पूरा हो जाएगा। इतनी क्षमता हम सबकी है। इसका मैं एक बार स्मरण देता हूं।

संघ प्रमुख की मुख्य बातें

- **अयोध्या में रामलला के साथ भारत का 'स्व' लौट आया है।**
- **संपूर्ण विश्व को त्रासदी से राहत देने वाला एक नया भारत खड़ा होकर रहेगा।**
- **अयोध्या उस पुरी का नाम है जिसमें कोई द्वंद नहीं, जिसमें कोई कलह नहीं, जिसमें कोई दुविधा नहीं।**
- **धर्म के जो चार मूल्य जिनकी चौखट पर धर्म है ऐसा श्रीमद् भागवत में बताया है - सत्य, करुणा, शुचिता और तपस।**
- **मंदिर निर्माण पूरे होते-होते विश्व गुरु भारत का निर्माण भी पूरा हो जाएगा। इतनी क्षमता हम सबकी है।**

प्रधानमंत्री का 11 दिवसीय विशेष अनुष्ठान

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 22 जनवरी को अयोध्या धाम में राम मंदिर में श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के लिए 11 दिवसीय विशेष अनुष्ठान किया। इसी क्रम में महाराष्ट्र के नासिक धाम-पंचवटी से अनुष्ठान की शुरुआत कर 21 जनवरी तक विभिन्न राज्यों में राम से जुड़े कई दिव्य मंदिरों में पहुंचकर विशेष पूजा अर्चना की।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 12 जनवरी को महाराष्ट्र के नासिक में कालाराम मंदिर में दर्शन और पूजा-अर्चना की। इसके अलावा उन्होंने श्री राम कुंड पर भी पूजा की। प्रधानमंत्री ने कहा कि – "नासिक में श्री कालाराम मंदिर में प्रार्थना और दिव्य वातावरण से अविश्वसनीय रूप से धन्य महसूस कर रहा हूं। वास्तव में यह सादगीपूर्ण और आध्यात्मिक अनुभव है।"

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 16 जनवरी को आंध्र प्रदेश में पुट्टपर्थी के लेपाक्षी ग्राम स्थित वीरभद्र मंदिर में दर्शन और पूजा की। पीएम मोदी ने तेलुगु में रंगनाथ रामायण के छंद सुने और आंध्र प्रदेश की पारंपरिक छाया कठपुतली कला जिसे थोलू बोम्मालता के नाम से जाना जाता है, के माध्यम से प्रस्तुत जटायु की कहानी देखी।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 17 जनवरी को केरल के त्रिप्रयार में श्री रामास्वामी मंदिर में दर्शन और पूजा-अर्चना की। इस दौरान प्रधानमंत्री ने सांस्कृतिक प्रस्तुति का भी अवलोकन किया तथा कलाकारों और बटुकों को सम्मानित भी किया। मलयालम में श्री अध्यात्म रामायण के छंद और अन्य भजन भी प्रधानमंत्री ने सुना।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 17 जनवरी को केरल के गुरुवायूर मंदिर में दर्शन और पूजा-अर्चना की। प्रधानमंत्री ने लिखा कि – "पवित्र गुरुवयूर मंदिर में प्रार्थना और मंदिर की दिव्य ऊर्जा अपरंपार है। मैंने कामना की कि हर भारतीय सुखी और समृद्ध रहे।"

प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने 20 जनवरी को तमिलनाडु के अरुलमिगु रामनाथस्वामी मंदिर में पूजा-अर्चना की। प्रधानमंत्री ने एक्स पर लिखा '140 करोड़ भारतीयों के अच्छे स्वास्थ्य और खुशहाली के लिए अरुलमिगु रामनाथस्वामी मंदिर में प्रार्थना की।'

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने 21 जनवरी को धनुषकोडी स्थित कोठंडारामास्वामी मंदिर में दर्शन और पूजा-अर्चना की। यह मंदिर श्री कोठंडाराम स्वामी को समर्पित है। कोठंडारामा नाम का अर्थ धनुषधारी राम है। यह धनुषकोडी नामक स्थान पर स्थित है। ऐसा कहा जाता है कि यहीं पर विभीषण पहली बार श्री राम से मिले थे और उनसे शरण मांगी थी। मान्यता है कि यह वही स्थान है जहां श्री राम ने विभीषण का राज्याभिषेक किया था।

तमिलनाडु दौरे के दौरान प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने धनुषकोडी में अरिचल मुनाई बिंदु का दौरा किया। मान्यता अनुसार यहीं पर राम सेतु का निर्माण हुआ था। धनुषकोडी अरिचल मुनई प्रभु श्री राम के जीवन में विशेष महत्व रखता है। यह राम सेतु का प्रारंभिक बिंदु है।

पूरा राष्ट्र राममय : योगी आदित्यनाथ

रामाय रामभद्राय रामचंद्राय वेधसे।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः।।

22 जनवरी को अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि में रामलला के प्राण प्रतिष्ठा समारोह को संबोधित करते हुए भाव विह्वल और उल्लासित मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि 500 वर्षों के लंबे अंतराल के उपरांत इस चिर प्रतीक्षित मौके पर अंतरमन में भावनाए कुछ ऐसी हैं कि उन्हें व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं मिल रहे हैं। मन भावुक है, भाव विभोर है। भाव विह्वल है। इस ऐतिहासिक और अत्यंत पावन अवसर पर भारत का हर नगर, हर ग्राम, अयोध्या धाम है। हर मार्ग श्री राम जन्मभूमि की ओर आ रहा है। हर मन में राम नाम है। हर आंख हर्ष और संतोष के आंसू से भीगी है। हर जिह्वा राम-राम जप रही है। रोम-रोम में राम रमे हैं। पूरा राष्ट्र राममय है। ऐसा लगता है कि हम त्रेता युग में आ गए हैं। रघुनंदन राघव रामलला हमारे हृदय के भावों से भरे संकल्प स्वरूप सिंहासन पर विराजे हैं। हर राम भक्त के हृदय में प्रसन्नता है, गर्व है और संतोष के भाव हैं। आखिर भारत को इसी दिन की तो प्रतीक्षा थी। भाव विभोर कर देने वाली इस दिन की प्रतीक्षा में लगभग पांच शताब्दी व्यतीत हो गई। दर्जनों पीढ़ियां अधूरी कामना लिए इस धरा धाम से साकेत धाम में लीन हो गईं। किंतु प्रतीक्षा और संघर्ष का क्रम सतत जारी रहा।

श्री रामजन्मभूमि संभवतः विश्व में पहला ऐसा अनूठा प्रकरण होगा, जिसमें किसी राष्ट्र के बहुसंख्यक समाज ने अपने ही देश में अपने आराध्य की जन्मस्थली पर मंदिर निर्माण के लिए इतने वर्षों तक और इतने स्तरों पर लड़ाई लड़ी हो। संतों, संन्यासियों, पुजारियों, नागाओं, निहंग, बुद्धिजीवियों, राजनेताओं, जनजातियों सहित समाज के हर वर्ग ने, जाति-पाति, विचार, दर्शन, उपासना पद्धति से ऊपर उठकर के रामकाज के लिए

स्वयं को उत्सर्ग किया। अंततः वह शुभ अवसर आ ही गया। जब कोटि-कोटि आस्थावानों के त्याग और तप को पूर्णता प्राप्त हो रही है। इस अवसर पर आत्मा प्रफुल्लित है, इस बात से कि मंदिर वहीं बना है, जहां बनाने का संकल्प लिया था। उन्होंने कहा कि श्री राम जन्मभूमि महायज्ञ न केवल सनातन आस्था और विश्वास की परीक्षा का काल रहा, बल्कि संपूर्ण भारत को एकात्मता के सूत्र में बांधने के लिए, राष्ट्र की सामूहिक चेतना जागरण के ध्येय में भी सफल सिद्ध हुआ है। सदियों बाद भारत में हो रहे इस चिर प्रतीक्षित नवनिर्माण को देख अयोध्या समेत पूरा भारत का वर्तमान आनंदित हो उठा है। जिस अयोध्या को अवनी की अमरावती और धरती का वैकुंठ कहा गया वह सदियों तक अभिशप्त थी, उपेक्षित रही। सुनियोजित शिकार झेलती रही। अपनी ही भूमि पर सनातन आस्था पददलित होती रही, चोटिल होती रही किंतु राम का जीवन हमें संयम की शिक्षा देता है और भारतीय समाज ने संयम बनाए रखा। लेकिन हर एक दिन के साथ ही हमारा संकल्प और भी दृढ़ होता गया और आज देखिए पूरी दुनिया अयोध्या के वैभव को निभा रही है। हर कोई अयोध्या आने को आतुर है। आज अयोध्या में त्रेता युगीन वैभव उतर आया, ऐसा दिख रहा है। यह धर्म नगरी विश्व की सांस्कृतिक राजधानी के रूप में प्रतिष्ठित हो रही है।

पूरा विश्व दिव्य और भव्य अयोध्या का साक्षात्कार कर रहा है। सांस्कृतिक अयोध्या, आयुष्मान अयोध्या, स्वच्छ अयोध्या, सक्षम अयोध्या, सुरम्य अयोध्या, सुगम्य अयोध्या, दिव्य अयोध्या और भव्य अयोध्या के रूप में पुनरुद्धार के लिए हजारों करोड़ रुपये वर्तमान में यहां पर भौतिक विकास के लिए लग रहे हैं। राम जी की पौढ़ी, नया घाट, गुप्तार घाट, ब्रह्मकुंड, भरत कुंड, सूरजकुंड विभिन्न कुंडों के कायाकल्प, संरक्षण, संचालन, रख-रखाव के कार्य हो रहे हैं। रामायण परंपरा की कल्चरल मैपिंग कराई जा रही है। राम वन गमन पथ पर रामायण वीथिका का निर्माण हो रहा है। नई अयोध्या में पुरातन संस्कृति और सभ्यता का संरक्षण तो हो ही रहा है, भविष्य की जरूरतों को देखते हुए आधुनिक पैमाने के अनुसार सभी नगरीय सुविधाएं भी विकसित हो रही हैं। इस मोक्षदयिनी नगरी को प्रधानमंत्री की प्रेरणा से अब सोलर सिटी के रूप में भी विकसित किया जा रहा है। यह एक नगर या तीर्थ भर का विकास नहीं है, यह उस विश्वास की विजय है जिसे 'सत्यमेव जयते' के रूप में भारत के राजचिह्न में अंगीकार किया गया है। यह लोक आस्था और जन विश्वास की विजय है। भारत के गौरव की पुनर्प्रतिष्ठा है। अयोध्या का दिव्य दीपोत्सव नए भारत की सांस्कृतिक पहचान बन रहा है और श्री रामलला की प्राण प्रतिष्ठा का समारोह भारत की सांस्कृतिक अंतरात्मा को समरस की एक अभिव्यक्ति सिद्ध कर रहा है। श्री राम जन्मभूमि मंदिर की स्थापना भारत के सांस्कृतिक पुनर्जागरण का आध्यात्मिक अनुष्ठान है। यह राष्ट्र मंदिर है। निसंदेह श्री रामलला विग्रह की प्राण प्रतिष्ठा राष्ट्रीय गौरव का एक ऐतिहासिक अवसर है। ■

राममय दुनिया

22 जनवरी को अयोध्या में श्रीरामलला की प्राण प्रतिष्ठा को लेकर पूरा देश राममय रहा। गांव-गांव, शहर-शहर सभी राम भक्ति में डूबे रहे। सीमाओं से परे प्राण प्रतिष्ठा को लेकर अनेक देशों के सनातन प्रेमियों में भी गजब का उत्साह दिखा। लगभग 50 से अधिक देश विभिन्न माध्यमों से श्रीरामलला प्राण प्रतिष्ठा समारोह के हिस्सा बनें। वहां भी प्राण प्रतिष्ठा के अलौकिक क्षण पर जय श्री राम के नारों के साथ विभिन्न आयोजनों में उत्साह दिखा। विश्व के अनेक देशों में हुए आयोजन की रिपोर्ट-

थाईलैंड के अयुत्या शहर में उत्साह

अयोध्या नाम की महिमा देश की सीमाओं से परे है। इसलिए तो भारत से हजारों किलोमीटर दूर थाइलैंड में भी एक अयोध्या है। थाइलैंड में उसे अयुत्या कहा जाता है। इस शहर की भगवान राम में अटूट श्रद्धा व आस्था है। अयोध्या के राजा राम रहे, इसलिए अयुत्या में आज भी राजा के नाम में राम जरूरी है। रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के लिए अयोध्या की तरह अयुत्या को भी सजाया गया। प्राण प्रतिष्ठा के लिए भारत की तरह अयुत्या शहर समेत थाइलैंड के अन्य हिंदू मंदिरों में धूम रही। कई मंदिरों में 22 जनवरी को प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम का सीधा प्रसारण लोगों ने देखा।

मॉरीशस के मंदिरों में प्राण प्रतिष्ठा की गूंज

48 प्रतिशत हिंदू जनसंख्या वाले मॉरीशस देश के लगभग सभी मंदिरों में रामायण पाठ हुआ। इसलिए रामलला का प्राण प्रतिष्ठा समारोह मॉरीशस के लिए भी काफी महत्वपूर्ण रहा। यह नहीं भारत सरकार की तर्ज पर वहां भी हिंदू कर्मचारियों को दो घंटे की छुट्टी दी गई। मॉरीशस में सनातन धर्म से जुड़े संगठनों ने विशेष कार्यक्रम का आयोजन भी किया। सौ स्थानों पर रामलला प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम का सीधा प्रसारण हुआ।

पेरिस में भी राम राम

फ्रांस की राजधानी पेरिस स्थित एफिल टॉवर में भी रामलला के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम की झलक दिखी। यहां भी विशाल रथ यात्रा निकाली गयी और लोगों ने सामूहिक रूप से विश्व कल्याण यज्ञ का आयोजन किया।

नेपाल के मंदिरों में राम भक्तों का जयघोष

पड़ोसी देश नेपाल, जिसका भारत के साथ प्रगाढ़ सांस्कृतिक संबंध है। वहां भी कई मंदिरों में रामलला की प्राण प्रतिष्ठा समारोह के अवसर पर लोगों में उत्साह दिखा। विशेषकर, श्रीराम की ससुराल जनकपुर के लोग काफी उत्साहित दिखे। यहां के जनकपुर के मां जानकी मंदिर में भी दीपोत्सव मनाया गया।

कनाडा में अयोध्या राम मंदिर दिवस

कनाडा की आबादी में लगभग 5 लाख भारतीयों की संख्या है। ऐसे में अयोध्या के प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम की गूंज कनाडा न पहुंचे ऐसा हो नहीं सकता। इसी क्रम में ओंटारियो के ऑकविले वर ब्रैम्पटन ने 22 जनवरी को अयोध्या राम मंदिर दिवस के रूप में घोषित किया। दोनों शहरों के मेयर ने कहा कि अयोध्या में श्रीराम मंदिर का उद्घाटन दुनियाभर के हिंदुओं के लिए सांस्कृतिक, धार्मिक व ऐतिहासिक महत्व का है।

न्यूजीलैंड में राम मंदिर के लिए उत्साह

जय श्री राम। मैं प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित सभी भारतवासियों को बधाई देता हूं। यह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का नेतृत्व ही था, जिसने राम मंदिर निर्माण को 500 वर्षों बाद संभव बनाया। मुझे राम मंदिर जाने में खुशी होगी। यह कथन है न्यूजीलैंड के विनियमन मंत्री डेविड सेमोर का। वहीं न्यूजीलैंड सरकार में जातीय समुदाय मंत्री मेलिसा ली ने भी इंडिया की जगह भारत का उपयोग करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री के प्रयासों का नतीजा है राम मंदिर।

लंदन में प्राण प्रतिष्ठा पर कार रैली

ब्रिटेन में 22 जनवरी और उसके एक दिन पहले कार रैली और विभिन्न कार्यक्रमों के जरिए जय श्री राम की गूंज रही। 21 को पश्चिम लंदन के कोलियर रोड पर द सिटी पवेलियन से जय श्री राम के नारों के साथ कार रैली शुरू होकर पूर्वी लंदन से गुजरी थी। शाम को मंदिर में महाआरती का भी आयोजन हुआ। साथ ही प्राण प्रतिष्ठा के दिन ब्रिटेन के सैकड़ों से अधिक मंदिरों में विशेष पूजन-हवन का आयोजन हुआ।

"आइए हम श्री राम के अयोध्या लौटने पर खुशियां मनाएं। उनका आशीर्वाद और शिक्षाएं शांति और समृद्धि की दिशा में हमारा मार्ग प्रशस्त करती रहें। जय हिन्द!"
– प्रविंद कुमार जगन्नाथ, प्रधानमंत्री, मॉरीशस।

"राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के इस शुभ अवसर पर भारत के लोगों को हार्दिक शुभकामनाएं। यह दुनिया भर के भक्तों के लिए एक ऐतिहासिक क्षण है। मैं अयोध्या में राम मंदिर के जल्द दर्शन के लिए उत्सुक हूं।"
– भारत में इजरायल के राजदूत,

"प्राण प्रतिष्ठा समारोह में भाग न ले पाने पर अफसोस जताते हुए कहा कि वह 22 जनवरी को राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा लगभग दूसरी दिवाली जैसा है। यह इस धर्म की सुंदरता है।"
– मैरी मिलबेन, अफ्रीकी-अमेरिकी गायिका व अभिनेत्री ■

समरसता का संदेश देती अयोध्या

डॉ. मनमोहन सिंह शिशौदिया
शिक्षक, भौतिकी विज्ञान विभाग
गौतमबुद्ध विवि, ग्रेटर नोएडा

भारत अनगिनित विविधताओं यथा पंथ, संप्रदाय, वर्ग, जाति, भाषा, वेशभूषा वाला देश है। अनेक विविधताओं के बावजूद समाज में निहित समरसता देश की शक्ति का न केवल वास्तविक स्रोत है, अपितु हमारी वैश्विक पहचान भी है। सामाजिक समरसता के ये धागे वास्तव में बड़े कोमल, नरम एवं संवेदनशील होते हैं। अपनी राजनैतिक स्वार्थ-पूर्ति के लिए लंबे समय से विदेशी आतताई और बाद में उन्हीं से प्रेरित एवं पोषित देश के कुछ नफरती तत्व एकता, बंधुता और समरसता के इन धागों को उलझाने एवं नष्ट करने के लिए प्रयत्नशील रहे हैं। अतः भारत के मूल में समाहित सामाजिक समरसता को अक्षुण्ण रखने के लिए आवश्यक है कि समाज के सभी मत, पंथों, एवं वर्गों में एकता, सामंजस्यता, समानता एवं स्वर ऐक्य ध्वनित हो। दुनिया में व्यावहारिक सामाजिक समरसता का यदि कोई आदर्श हो सकता है तो वो हैं मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम, जो भारतीयों के रोम-रोम की स्पंदन हैं। जिनका जीवन राम से है, जिनका जीवन राम का है, जिनके मन, वचन और कर्म में सिर्फ राम हैं।

श्रीराम का पूरा जीवन सामाजिक समरसता की शिक्षाओं से ओतप्रोत है। वनगमन कि अवधि में केवट जाति के निषादराज को अपने मित्र का दर्जा देकर और वनवास के बाद पहली रात उन्हीं के यहां व्यतीत कर श्रीराम ने पूरे समाज को समरसता का संदेश दिया। रावण जैसे शक्तिशाली राजा के साथ युद्ध करने के लिए श्रीराम अयोध्या, मिथिला एवं अन्य राजाओं का सहयोग ले सकते थे, परंतु उन्होंने समाज के वंचित वनवासियों और आदिवासियों की शक्ति को पहचाना और उन्हीं के सहयोग से लंका विजय सिद्ध कर उनकी सामर्थ्य को समाज के सम्मुख प्रदर्शित एवं स्थापित किया। साथ ही यह संदेश दिया कि अनाचारी कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो, सामाजिक समरसता के सहारे ऐसे अनाचार, अत्याचार एवं शोषण से छुटकारा पाना संभव है। ऋषि-मुनियों द्वारा भील जाति कि मां शबरी को अछूत बताने पर श्रीराम उन्हीं से पूछते हैं कि इंसान को जन्म देने वाली स्त्री क्या अछूत हो सकती है? उन्होंने मां शबरी की कुटिया में पहुंच और फिर उनके झूठे बेर खाकर, प्रचलित छुआछूत को धता एवं अप्राकृतिक सिद्ध किया। इसी तरह माता अहिल्या का उद्धार कर, वनवासियों को अपने समान स्थापित कर, जटायु को सम्मान देकर सामाजिक समरसता को ही बढ़ावा दिया। आज कुछ लोगों द्वारा वनवासियों को 'वंचित', 'अशिक्षित', 'असभ्य', तो वनों को 'अविकसित' के रूप में परिभाषित किया जाता है। राम के समय सभी नागरिक एक समान थे, कुछ वनवासी थे, तो शेष नगरवासी। वे शिक्षा ग्रहण करने भी वन स्थित ऋषि-मुनियों के आश्रम गए। अपने जीवन के सबसे कष्टमय कालखंड में श्रीराम ने सहयोगी और सलाहकार वनवासियों को ही बनाया, जिनमें केवट निषाद, कोल, भील, किरात और भालू

श्रीराम का पूरा जीवन सामाजिक समरसता की शिक्षाओं से ओतप्रोत है। वनगमन की अवधि में निषादराज को अपने मित्र का दर्जा देकर और वनवास के बाद पहली रात उन्हीं के यहां व्यतीत कर श्रीराम ने पूरे समाज को समरसता का संदेश दिया। श्रीराम ने समाज के वंचित वनवासियों और आदिवासियों की शक्ति को पहचाना और उन्हीं के सहयोग से लंका विजय कर उनकी सामर्थ्य को समाज के सम्मुख प्रदर्शित एवं स्थापित किया। साथ ही यह संदेश दिया कि अनाचारी कितना ही शक्तिशाली क्यों न हो, सामाजिक समरसता के सहारे ऐसे अनाचार, अत्याचार एवं शोषण से छुटकारा पाना संभव है।

सम्मिलित रहे। वनवासियों, गिरिवासियों एवं आदिवासियों को श्रीराम ने 'सखा' कहकर संबोधित किया, तो वनवासी हनुमान को लक्ष्मण से अधिक प्रिय बताया। शायद राम इसलिए ही भगवान बन पाए, चूंकि उन्हें सर्वाधिक चिंता वंचितों, शोषितों, आदिवासियों, एवं तिरिस्कृतों की थी। उपरोक्त घटनाएं हमें यह सिखाती हैं कि भगवान श्रीराम के लिए केवल कर्म ही महत्व रखता है, मत, पंथ, जाति, वर्ग, समुदाय आदि सब निरर्थक हैं।

बाईस जनवरी को पुरषोत्तम श्रीराम की जन्मस्थली श्रीअयोध्या में श्रीराम मंदिर में भगवान श्रीराम की प्राण प्रतिष्ठा ने भारतीय समाज में व्याप्त समरसता को प्रदर्शित करने के साथ ही इसे और सुदृढ़ किया है। श्रीराम जन्मभूमि आंदोलन से प्राण प्रतिष्ठा तक का कालखंड यह बोध कराता है कि समाज में इससे एकता, अखंडता एवं समरसता का प्रकटीकरण हुआ। उदाहरण के लिए, मंदिर निर्माण हेतु पहली ईंट ही 9 नवंबर 1989 को बिहार के दलित समुदाय के श्री कामेश्वर चौपाल द्वारा रखी गई। यहां तक कि एएसआई के तत्कालीन क्षेत्रीय निदेशक श्री के. के. मोहम्मद ने बार-बार दोहराया कि अयोध्या में राम मंदिर भारत में इस्लाम के आने से पहले से मौजूद था। उन्होंने पुरातात्विक खुदाई एवं शोध के आधार पर यह निष्कर्ष निकाला कि बलात स्थापित बाबरी ढांचे के नीचे श्रीराम मंदिर के स्पष्ट साक्ष्य हैं। वास्तविकता के इस रहस्योदघाटन ने न्यायालय के फैसले में अहम भूमिका अदा की। स्वामी श्री रामभद्राचार्य जी, जोकि 2 महीने की उम्र से ही दृष्टिबाधित हैं, उन्होंने न्यायालय में अयोध्या में राम मंदिर होने के अथर्ववेद, स्कंदपुराण एवं वाल्मीकि रामायण जैसे स्रोतों से साक्ष्य एवं संदर्भ उपलब्ध कराकर वहां मूल रूप से राम मंदिर होने के अकाट्य सबूत उपलब्ध कराए। मंदिर निर्माण के संबंध में अंतिम फैसला सुनाने वाली उच्चतम न्यायालय की 5 सदस्यीय पीठ में न केवल बहुसंख्यक अपितु अल्पसंख्यक समुदाय के न्यायाधीश सैय्यद अब्दुल नजीर भी शामिल थे और पूरी पीठ ने अंतिम फैसला भी एकमत से ही सुनाया। समरसता की अपेक्षित भावना के अनुरूप इसे स्वीकार भी सम्पूर्ण समाज ने किया और वो भी हर्ष और उल्लास के साथ।

राम मंदिर निर्माण के लिए धन संग्रह हेतु चलाए गए निधि समर्पण अभियान में भी समरसता प्रतिबिंबित हुई। अभियान का आरंभ दिल्ली के वाल्मीकि मंदिर से स्वामी कृष्ण विद्यार्थी जी महाराज द्वारा दस रुपये की समर्पण राशि से, लखनऊ में नगरपालिका में कार्यरत सफाई कर्मी नरेंद्र वाल्मीकि से तथा मुंबई में अंबेडकर बस्ती से हुआ। निधि समर्पण अभियान का समापन दिल्ली के रविदास मंदिर में संत रविदास जयंती के दिन ही कार्यक्रम आयोजित कर हुआ। इसके माध्यम से समाज में यह स्पष्ट संदेश गया कि श्रीराम मंदिर निर्माण में लगी प्रत्येक ईंट में समाज के उपेक्षित समझे जाने वाले समुदायों की भी बराबर की हिस्सेदारी है। मंदिर के लिए चयनित 24 पुजारियों में अनुसूचित जाति और 1 पिछड़ा वर्ग से हैं। इनका चयन भी मात्र योग्यता के आधार पर ही हुआ है न कि जाति आदि पर। अतः श्री राम मंदिर निर्माण ने स्वामी रामानंद जी की, "जाति-पाति पूछे न कोई, हरि का भजे सो हरि का होई" कहावत को वास्तविकता में चरितार्थ किया है।

भारत में ही नहीं, अपितु श्रीलंका, इंडोनेशिया, मॉरीशस, थाईलैंड, नेपाल आदि देशों के राम भक्तों को अयोध्या में भगवान राम के प्रतिष्ठित होने का इंतजार था। 22 जनवरी को इन देशों में भी उत्सव मनाए गए और अनेक विदेशी एवं विदेशों में बसे भारतीय अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के साक्षी बने।

राम नगरी अयोध्या में भव्य, दिव्य भगवान श्रीराम का राष्ट्र-मंदिर दुनिया भर में रह रहे आस्थावान भारतीयों के लिए बड़ी खुशखबरी है। भारत में ही नहीं, अपितु श्रीलंका, इंडोनेशिया, मॉरीशस, थाईलैंड, नेपाल आदि देशों के राम भक्तों को अयोध्या में भगवान राम के प्रतिष्ठित होने का इंतजार था। 22 जनवरी को इन देशों में भी उत्सव मनाए गए और अनेक विदेशी एवं विदेशों में बसे भारतीय अयोध्या में प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम के साक्षी बने। श्रीलंका की रामायण टीम का नेतृत्व कर रहीं डॉ. उशांति थुरैसिंगम इस अवसर पर अयोध्या में अपनी मौजूदगी को गर्व और सौभाग्य का विषय मानती हैं, श्रीलंका के ही आई सजीतभगवान राम की तरह एक आदर्श पुत्र, पति और भाई होना चाहते हैं। थाईलैंड की रामायण टीम का समन्वय कर रही किट्टीपोरन छैबून थाईलैंड से सोशल मीडिया व फोन पर लोगों की खुश करने वाली प्रतिक्रियाओं से अभिभूत थीं। जहां थाईलैंड के कलाकारों ने इस अवसर पर रामायण प्रस्तुति दी। मॉरीशस के कलाकारों ने राम कीर्तन एवं भजन प्रस्तुत किये। थाईलैंड में सात सालों से रामलीला में राम का किरदार निभाने वाले जिरत वीजीट्रजिट्लर्सके परिवर को नाज है कि वह राम जैसे आदर्श की भूमिका निभा रहा है। श्रीलंका में रावण का किरदार निभाने वाले अनुजाआनंदभी राम मंदिर प्राण प्रतिष्ठा के अवसर पर भारत आकार खुश और गौरवान्वित हैं। कार्यक्रम में राष्ट्र एवं समाज जीवन के विभिन्न क्षेत्रों यथा 45 आर्थिक विशेषज्ञ, 48 राजनीतिक दलों से, 15 राम जन्मभूमि ट्रस्ट से, 92 अनिवासी भारतीय, 400 श्रमिक, 50 कारसेवकों के परिवारजन तथा 4000 साधु-महात्माओं ने भाग लिया। साथ ही 258 वकील अथवा कानून के जानकार, 30 वैज्ञानिक, 44 रक्षा विशेषज्ञ, 159 कलाकार, 50 शिक्षाविद, 16 साहित्यकार, 93 खिलाड़ी, 7 डॉक्टर, 30 प्रशासनिक अधिकारी, 164 मीडिया कर्मी, 5 पुरातत्ववेत्ता, तथा 800 उद्योगपति इसके साक्षी बने। अयोध्या में हुई राम-मंदिर प्राण-प्रतिष्ठा ने भारत में सामाजिक समरसता को प्रतिबिंबित करने के साथ ही इसे और भी सुदृढ़ करने कि नींव रखी है। ■

श्रीराम का राष्ट्रावतार

नरेन्द्र भदौरिया
वरिष्ठ पत्रकार

श्रीराम का राष्ट्रावतार हो रहा है। अयोध्या में इस बार उनका अवतरण श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर में शिलाखण्डों की मूर्तियों में ही नहीं, अपितु सम्पूर्ण राष्ट्र के कण-कण में हुआ है। भारत के जन-जन में राष्ट्र देवता का प्राकट्य हुआ है। यह राष्ट्रोत्थान नहीं, राष्ट्रावतार है। इसका दीर्घ काल तक पूरी धरा पर प्रभाव रहेगा।

सनातन संस्कृति के शास्त्रज्ञ बताते हैं कि श्रीराम भगवान विष्णु के ऐसे अवतार हैं जिनका भारत भूमि पर पुनरागमन होता रहता है। अयोध्या के राजा दशरथ और उनकी महारानी कौशल्या के घर श्रीराम ने मानवरूप में अवतार लिया था। इसके पहले भी श्रीराम धरा पर आये थे। ऋषियों को दिये गये वचन के अनुसार त्रेता युग की समाप्ति के समय ऋषियों की विनती सुनकर वचन दिया था कि आवश्यकता पड़ने पर फिर अवतार लेंगे। इस बार 2024 में श्रीराम का राष्ट्रावतार हो रहा है। अयोध्या में इस बार उनका अवतरण श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर में शिलाखण्डों की मूर्तियों में ही नहीं, सम्पूर्ण भारत के कण-कण में राष्ट्रावतार के रूप में हुआ है। भारत के जन-जन में राष्ट्र देवता का प्राकट्य हुआ है। समस्त संसार के लिए यह अभूतपूर्व है। बिना किसी जीवन्त अवतार के एक साथ किसी राष्ट्र का समुत्कर्ष साफ झलकने लगा है। यह राष्ट्रोत्थान नहीं, राष्ट्रावतार है। इसका दीर्घ काल तक पूरी धरा पर प्रभाव रहेगा। भारत शाश्वत रूप से मान्य जगतगुरु है। अपनी इसी भूमिका की पुनर्स्थापना के निमित्त यह राष्ट्रावतार श्रीराम ने धारण किया है। सृष्टि की इस विराट होनी का उत्सव केवल भारत ही मना सकता है। इसीलिए रामावतार की परम पावन भूमि को भगवान ने इस निमित्त स्वयं चयनित किया। स्वयं श्रीराम ने इसके लिए 496 वर्ष (1528 से 2024) की लम्बी अवधि तक प्रतीक्षा की। कुल 134 वर्ष तक न्याय की लड़ाई का अन्त होने की प्रतीक्षा की। देव दुर्लभ नेतृत्व को गढ़ने के लिए सामाजिक संगठनों ने 1925 से लेकर 2024 तक पूरे 99 वर्ष अनवरत संघर्ष किये। किसी युगान्तरकारी चमत्कारी राष्ट्र के

अभ्युदय के निमित्त यह अवधि बहुत लम्बी नहीं कही जा सकती।

श्रीराम 22 जनवरी 2024 से लेकर कितने युगों तक भारत के गगनांचल में मार्त्तण्ड बनकर चमकते रहेंगे यह अवधि वह स्वयं निर्धारित करेंगे। निश्चय ही भारत भूमि की इस दिव्य राजधानी अयोध्या से वह संसार ही नहीं, सौर संसार का संचालन करेंगे। श्रीराम ने यह कभी नहीं बताया था कि हर बार एक ही रूप में अवतरित होंगे या प्रत्येक अवतार भिन्न होगा। त्रेता युगीन अवतार मानव अवतार होने का कारण स्पष्ट था। ब्रह्माजी ने भगवान विष्णु से कहा था कि लंका के सर्वज्ञ प्रतापी राजा रावण ने अपनी सुरक्षा के सारे प्रबन्ध कर रखे हैं। ऐसी व्यवस्था करते समय उसने एक भारी चूक कर दी। उसने देवगणों से अपनी सुरक्षा का सुदृढ़ प्रबन्ध किया था। इसीलिए इन्द्र सहित कोई देवता उसके विरुद्ध कभी विजयी नहीं हो पाया। अपने और कुल के लिए रक्षा की ऐसी ही प्रणाली उसने गन्धर्वों तथा सृष्टि की अन्यान्य बली प्रजातियों की सम्भावित चुनौती को लेकर बनायी थी। मानवों को रावण सर्वदा तुच्छ शक्ति वाला सहज रूप से निर्बल प्राणी मानता था। इसीलिए मानव के प्रति पूरी तरह आश्वस्त था कि यह निर्बल जीव उसके जैसे महाप्रतापी राक्षस का सामना करने की बात कभी नहीं सोचेगा। ब्रह्मा जी के परामर्श से श्रीराम ने मानव अवतार लेने का निश्चय किया। इस मानव अवतार को श्रीराम ने ऋषि गणों की विनती सुनकर मर्यादा स्थापना के पुनीत उद्देश्य को समर्पित कर दिया।

भगवान का मर्यादा पुरुषोत्तम अवतार कालजयी बन गया। इतनी ख्याति इससे पहले हुए अवतारों में से किसी को नहीं मिली। श्रीराम का मर्यादा पुरुषोत्तम अवतार जन-जन में व्याप्त हो गया। युगों की सीमाएं बनती टूटती रहीं, पर श्रीराम जन नायक बने रहे। कोई नहीं पूछता श्रीराम ने मर्यादा पुरुषोत्तम अवतार कब धारण किया। हर किसी के मानस में श्रीराम अपनी भार्या देवी सीता और भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न के संग सदा जीवन्त बने रहते हैं। सभी को लगता है कि रामावतार तो अभी कल की बात है। हर वर्ष श्रीराम लीला महोत्सव, घर-घर श्रीराम कथा का गायन-चिन्तन अनवरत चलता आया है। अवतार के पूरे काल खण्ड में श्रीराम ने मानव प्रजाति के लिए आचरण की ऐसी मर्यादाएं खींच दीं कि सम्पूर्ण सृष्टि के नाना विधि जीव मनुष्य को सर्वोत्तम जीव मानने लगे। यहां तक कि देवगणों को मानव बनकर भारत की धरती पर लीलाएं करने की चाह जाग उठी। हर जीवात्मा चाहती है कि उसे एक बार मनुष्य योनि में जन्म लेने का सुअवसर मिल जाये। सनातन संस्कृति के सभी ग्रन्थों में मानव के उत्कृष्ट स्वरूप मर्यादा पुरुषोत्तम के कथानक मिलते हैं। इन कथाओं की गूंज धरती पर सर्वत्र सुनायी पड़ती है। थोड़ा विचार कीजिए, परशुराम अवतार ने धरती पर अत्याचार करने वाले कितने शूरवीर को परास्त किये थे। इनमें कई तो ऐसे थे जो

2024 में आकुल सरयू की धारा मानो सभी राम भक्तों से कह रही है कि सभी मिल मंगल गीत गाओ श्रीराम का राष्ट्रावतार हो रहा है। अपलक निहारते भक्तों के नेत्रों से लुढ़कती अश्रुधाराएं बता रही हैं कि उनकी कितनी पीढ़ियों ने इस पल के लिए श्रीराम की परछाइयों को गुहार कर कहा था हे राम एक दिन तुम्हें आना ही पड़ेगा।

रावण से अधिक बलिष्ठ थे। श्रीनरी सिंह अवतार प्रचण्ड शक्ति सम्पन्न राक्षस राजा हिरण्यकशिपु के वध के लिए हुआ था। मत्स्य , कूर्म जैसे अवतार तो अपरिमित शक्ति से परिपूर्ण थे। वामन अवतार की बात बड़ी निराली थी।

ऐसा नहीं कि मर्यादा पुरुषोत्तम अवतार की जितनी विशद व्याख्या हुई उतनी अन्य अवतारों की नहीं हुई। पर श्रीराम के अवतार के सन्दर्भ जिस तरह जन-जन से जुड़ गये वैसा अन्य अवतारों के साथ नहीं हो सका। जननायक श्रीराम ने अपने आपको भगवान का अवतार होने की प्रतीति कभी किसी को नहीं करायी। वह प्रत्येक लीला में नर बने रहे। नारायण बनकर एक भी लीला नहीं की। वनवास की घोषणा से उद्विग्न नहीं हुए। युवराज बनाये जाने की तैयारियों को देखकर जितने सहज थे उतने ही स्थिर चित्त वन गमन करते समय दिखे। एक मर्यादित मानव सुख-दुख में समान कैसे रहे। यह सीख देना सामान्य बात नहीं थी। मनुष्य को दुर्गम्य भूमिकाओं को कैसे जीना चाहिए यही तो सिखा गये श्रीसीताराम। उनके जीवन के प्रत्येक पल की व्याख्या अनेक रामायणकारों ने बहुत सटीक ढंग से की है। व्याख्याकारों का एक उत्तम पक्ष यह है कि महर्षि वाल्मीकि और गोस्वामी तुलसीदास ने जो दिशा दिखायी उसका उल्लंघन किसी ने नहीं किया। श्रीराम मानव प्रकृति में व्याप्त हैं इतना कहना ही पर्याप्त नहीं है। आदि शंकराचार्य के शब्दों में राम तो सृष्टि के कण-कण में सदा के लिए रम चुके हैं।

भारत में श्रीराम के राष्ट्रावतार की पटकथा 1526 में लिखनी शुरु हुई थी। कालांतर में सदियों वही हेतु राष्ट्रावतार का कारक बना। और फिर श्रीराम की नगरी अयोध्या में सूर्य दिखायी पड़ रहा है। आशा की तेजश्वी किरणें छिटक रही हैं। इसीलिए यह श्रीराम का राष्ट्रावतार ही तो है, जो भारत के लिए ही नहीं समग्र विश्व के लिए चमत्कारी घटनाओं की श्रृंखला सिद्ध होने जा रहा है। अयोध्या को देखकर लगता है कि एक साथ कई सूर्योदय होने को हैं। जिनकी स्वर्णिम आभाओं ने सरयू नदी के तटों को अलंकृत कर दिया है। कई तीर्थ यहां की रेती पर पड़ाव जमाये हुए हैं। जिनको श्रीराम की पैजनियों की छमक सुनायी पड़ रही है। धन्य हैं माता सरयू के तटबन्ध जिन्होंने कभी त्रेता का अवतार देखा था, फिर एक दिन कुल के लोगों और पुरवासियों सहित श्रीराम का जलावतरण देखा। अब 2024 में आकुल सरयू की धारा मानो सभी राम भक्तों से कह रही है कि सभी मिल मंगल गीत गाओ श्रीराम का राष्ट्रावतार हो रहा है। अपलक निहारते भक्तों के नेत्रों से लुढ़कती अश्रुधाराएं बता रही हैं कि उनकी कितनी पीढ़ियों ने इस पल के लिए श्रीराम की परछाइयों को गुहार कर कहा था हे राम एक दिन तुम्हें आना ही पड़ेगा। कलियुग के रामावतार की जय। ■

राम मंदिर का शिल्प सौन्दर्य एवं तकनीकी

अशोक कुमार सिन्हा
सचिव, विश्व संवाद केन्द्र, अवध

कई सदियों की प्रतीक्षा और संघर्ष के बाद आखिरकार उस शुभ क्षण का इंतजार खत्म हो गया। और दिव्य, भव्य एवं तीनों लोकों में न्यारी नगरी अयोध्या और श्री राम जन्मभूमि मंदिर प्राण प्रतिष्ठा ने एक बार फिर से त्रेतायुग के अहसास को जीवंत कर दिया है।

अयोध्या में नवनिर्मित राममन्दिर विगत 500 वर्षों के सतत् संघर्ष का एक सुखद परिणाम है। इसके पूर्व वाल्मीकि रामायण के अनुसार बालकाण्ड में उल्लेख है कि अयोध्या 12 योजन लम्बी और 3 योजन चौड़ी थी। इतिहासक्रम में अन्तिम बार उज्जैन के चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य ने रामजन्म स्थान पर स्मृतिस्वरूप भव्य मान्दिर का निर्माण किया था। जिसका जीर्णोद्धार पुश्यमित्र शुंग तथा चन्द्रगुप्त द्वितीय ने कराया था। सन 1528 में आक्रांता बाबर के आदेश पर उसके सेनापति मीर बाकी ने मंदिर तोड़कर मस्जिद का निर्माण किया था। हिन्दू समाज के परम आस्था वाले राम जन्मभूमि पर पुनः मंदिर बने, इसका संघर्ष अनवरत चला। आसपास के जमींदारों ने 77 बार इस स्थान पर संघर्ष किया। वर्ष 1949 में इसी स्थान पर भगवान का प्राकट्योत्सव साधु-संतों ने मनाया। यहां से नमाजियों को कई बार खदेड़ा गया। अंग्रेज अधिकारियों द्वारा साधु-संतों व भक्तों पर सजा व जुर्माना किया गया, जिसे भरा गया। 1984 में विश्व हिन्दू परिषद, सामाजिक व हिन्दू संगठनों का संघर्ष आन्दोलन में प्रवेश हुआ। महंत अवैद्यनाथ, दाऊ दयाल खन्ना, अशोक सिंघल ने इस संघर्ष में अतुलनीय योगदान दिया। महंत अवैद्यनाथ अध्यक्षता कर रहे थे। न्यायालय में देवकीनन्दन अग्रवाल का प्रयास रंग लाया। नया मुकदमा प्रारम्भ कर, जन्मभूमि रामलला की है जो नाबालिग हैं। अतः भक्त गण पैरवी करेगें, यह तर्क दिया गया। विपक्ष में मुस्लिम पक्ष इबादत के स्थान हेतु जमीन के लिए लड़ रहे थे। उच्च न्यायालय का फैसला रामलला (माइनर) के पक्ष में हुआ। पहले भूमि को दो भाग में बांटा गया। हिन्दू समाज को यह निर्णय अमान्य था। बाद में सर्वोच्च न्यायालय का निर्णय रामलला के पक्ष में आया। मुस्लिम पक्ष के इबादत करने के स्थान के मांग पर निर्णय लिया गया कि अन्य स्थान पर 5 एकड़ जमीन दी जाय। भारत सरकार ने जन्म स्थान का स्वामित्व 'राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट' बना कर उसे सौंपा। पूर्व में विश्व हिन्दू परिषद द्वारा मन्दिर का जो मानचित्र बनाया था, वह 2.77 एकड़ जमीन के अनुसार छोटा बनाया गया था। सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के बाद बड़ा और भव्य मन्दिर निर्माण हो, इस आकांक्षा और आवश्यकता के अनुरूप नक्शा बड़ा किया गया। मन्दिर का आकार बड़ा कर 360 फुट लम्बा और 235 फुट चौड़ा 5 भव्य मंडपों वाले मंदिर का मानचित्र तैयार किया गया। तदनुसार आईआईटी दिल्ली, सूरत, चेन्नई, कानपुर और केन्द्रीय भवन अनुसंधान संस्थान की सहायता से उनके परामर्श के आधार पर भूमि की जांच कराई गई। लक्ष्य रखा गया कि जो भवन निर्माण हो उसकी न्यूनतम आयु 1000 वर्ष हो। जन्म स्थान से 100 मीटर दूरी पर पवित्र, सरयू तट है इसलिए नीचे बलुई मिट्टी है। विशेषज्ञों द्वारा अनुसंधान के बाद 8 एकड़ स्थान की 15 मीटर गहरी मिट्टी की पूरी तह निकाल कर पत्थर जैसी नींव बना कर मन्दिर का आधार बनाने की योजना पर कार्य प्रारम्भ हुआ। राख, रसायन, पत्थर, बालू, 10 एमएम पत्थर कण मिला कर नींव का स्थान भरा गया। नींव में कर्नाटक से पत्थर मंगाकर भराई हुई। ग्रेनाइट स्टोन का प्रयोग हुआ। दिन रात कार्य हुआ। लार्सन एण्ड टुर्बो जैसी निर्माण संस्था सहित अन्य विशेषज्ञ संस्थाओं द्वारा कार्य कराया गया। नींव भरने के बाद ऊपर मंदिर सर्वोत्तम पत्थरों से बनाया गया। जिसमें कहीं भी स्टील

का प्रयोग नहीं हुआ। केवल मन्दिर का क्षेत्रफल 2.7 एकड़ है। मंदिर को नागर शैली में बनाया जा रहा है। नींव की डिजाइन हेतु आईआईटी, दिल्ली के पूर्व निदेशक डॉ. वीएस. राजू की अध्यक्षता में 8 वरिष्ठ अभियंताओं और निर्माण विशेषज्ञों की एक समिति बनाई गई। जिसने पूर्व प्रयोग हेतु 12 पिलर बनाकर पहले जमीन की मजबूती का परीक्षण किया। तत्पश्चात नींव भराई हुई। सन 1988 में अहमदाबाद के सोमपुरा परिवार को जो 15 पीढ़ियों से मंदिरों के डिजाइन बना रहे हैं, से वास्तु डिजाइन बनवाई गई थी। पुनः उसी परिवार से मुख्य वास्तुकार चुना गया। नये मुख्य वास्तुकार चंद्रकांत सोमपुरा व उनके दो बेटे निखिल और आशीष से ही ही नागर शैली में 360 फुट लम्बा, 235 फुट चौड़ा तथा 161 फुट ऊंचा मंदिर का नक्शा बनवाया गया। मंदिर में प्रार्थना कक्ष, रामकथा कुंज, वैदिक पाठशाला, संत निवास, यति निवास, संग्रहालय, रसोई, 5 मंडप, एक टावर का प्रावधान किया गया है। मंदिर केवल पूजा घर ही नहीं एक विद्यालय भी होता है। मंदिर बनाने के क्रम में खुदाई के दौरान कुबेर टीले की खुदाई में कुबेर जी की अधूरी प्रतिमा मिली थी। शेर आकृति का दो भारी खण्ड, गणेश मूर्ति, तलवार और मंदिर में प्रयोग होने वाले अनेक अवशेष मिले हैं। बाल हनुमान की प्रतिमा भी मिली है। सभी को संरक्षित कर संग्रहालय में प्रदर्शित किया जायेगा। मन्दिर का प्रवेश द्वार पूर्व दिशा में सरयू तट की ओर है। श्री राम जन्मभूमि प्रवेश द्वार पर गज, सिंह, हनुमानजी और गरुण जी की मूर्तियां स्थापित की गईं हैं।

दुनिया का यह दूसरा सबसे बड़ा राम मंदिर होगा। मंदिर में पत्थरों के जोड़ में तांबे की धातु के क्लिप प्रयोग किये जाएंगे। मुख्य संरचना कर्नाटक के ग्रेनाइट व अन्य कीमती मजबूत पत्थरों के ऊंचे बने चबूतरे से प्रारम्भ है। भूतल पर राजस्थान के वंशी पहाड़पुर से लाये गये गुलाबी रंग के पत्थरों से निर्माण हुआ है। प्रवेश व निकासद्वार अलग-अलग हैं। मुख्य प्रवेश द्वार से नृत्य मंडप, रंग मंडप, गुरु मंडप तथा गर्भगृह जो अष्टकोणीय आकार का निर्माण किया गया है। मंदिर जितना विशाल है उतना ही सुदृढ़ और मजबूत बना है। निर्माण 2 वर्ष पूर्व प्रारम्भ हुआ था। जिसका प्रथम तल तैयार हो गया है। शेष ऊपर का तल वर्ष 2025 तक पूर्ण कर लिया जायेगा। वही वर्ष राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के 100 वर्ष पूरे होने का होगा।

मन्दिर के चारों ओर आयताकार परकोटा है। चारों दिशाओं में इसकी कुल लंबाई 732 मीटर तथा चौड़ाई 14 फीट है। पूरे मंदिर में सभी खिड़की दरवाजे नागपुरी उच्च कोटि के सागौन लकड़ी से सुसज्जित होंगे। मुख्य द्वार का निर्माण मकराना संगमरमर से हुआ है। मंदिर के भूतल में स्तंभों की संख्याः 160 है, जिन पर देश के प्रसिद्ध कारीगरों द्वारा सुन्दर

कलाकृतियां बड़ी बारीकी से बनाई गई हैं। साथ ही भूतल पर सभी 14 स्वर्ण मंडित द्वारों की स्थापना का कार्य भी संपन्न हो गया है। इस तरह कुल 4 द्वार पार करने पर अष्टकोणीय सुन्दर व भव्य गर्भगृह में बाल रूप भगवान राम के दर्शन होंगे। गर्भगृह में नाभिनाल पर 51 इंच के रामलला विराजमान हैं। मंदिर में प्रवेश पूर्व दिशा से, 32 सीढ़ियां चढ़कर सिंहद्वार से होगा। ओडिशा के प्रतिकीर्ति बाले प्रसिद्ध कारीगर इन मूर्तियों का निर्माण कर रहे हैं। बाल रूप के रामलला पर रामनवमी के दिन मध्यान्ह 12 बजे सूर्य का प्रकाश पड़ेगा। भगवान गणेश, भगवान शिव, सूर्यदेव और मां दुर्गा की भव्य सुदर्शन मूर्तियां मन्दिर के चारों कोनों पर विराजमान रहेंगी। उत्तरी भुजा में मां अन्नपूर्णा व दक्षिणा भुजा में हनुमान जी का मंदिर होगा। वहीं परकोटे से बाहर रामजीवन से जुड़े ऋषियों यथा महर्षि वशिष्ठ, विश्वामित्र, अगस्त्य, वाल्मीकि, निषादराज, अहिल्या और शबरी की मूर्तियां विराजमान होंगी। साथ ही कुबेर टीले पर जटायु राज की प्रतिमा बनेगी।

बाल मूर्ति नेपाल के मुस्तांग जिले में बह रही काली गण्डकी नदी के तट से 26 टन व 14 टन की शालिग्राम शिलाएं लाकर निर्मित की गई हैं। बाल मूर्ति का स्वरूप वाल्मीकि में वर्णित 5 वर्ष के बाल स्वरूप रामलला से लिया गया है। उत्कृष्ट कारीगरों द्वारा कुल 5 बाल मूर्तियां तैयार की गईं, जिसमे से एक का चयन कर मुख्य गर्भगृह में स्थापित किया गया है। ऊपर के तल पर राम दरबार की मूर्ति विराजमान होगी। मन्दिर का विशाल घण्टा 2100 किलो वजन का है जो 6 फुट ऊंचा, 5 फीट चौड़ा हैं। इसी तरह 500, 250 व 100 किलो वजन के 10 और छोटे घंटे लगेंगे। सभी घंटे अष्टधातु के हैं, जो जलेसर जिला एटा (उत्तर प्रदेश) की फर्म बना रही है। एटा का जलेसर सम्पूर्ण भारत में घुंघरू व घन्टे बनाने के लिए प्रसिद्ध है। मंदिरों की मूर्तियों के चित्र, अलंकरण, लालित्य अभंग, द्विभंग व त्रिभंग मुद्रा में होगें। मन्दिर के पास अंगद टीला व नल टीला का निर्माण किया जायेगा। मंदिर निर्माण में पूर्व में सम्पन्न हुये राम मंदिर आन्दोलन के समय कार्यशाला में बने पत्थर के स्तंभों का नवीनीकरण करते हुए प्रयोग किया जा रहा है। साथ ही जो पूजित राम शिलाएं व ईंट 5 लाख गांवों से एकत्र की गई थीं, सभी का उपयोग यथास्थान, यथा आवश्यकता पूर्ण पवित्रता के साथ कर ली गई हैं।

मन्दिर की प्राण प्रतिष्ठा में लगभग 10 हजार ऐसे लोग भी उपस्थित रहे, जिनके परिवारों ने, सदस्यों ने रामजन्म भूमि आंदोलन में प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से भाग लिया है। जिन लोगों ने इस आन्दोलन में अपने जीवन का बलिदान दिया है, उनके परिवार के सदस्यों को भी आमंत्रित किया गया। इसके अतिरिक्त सभी भारतीय मत, पंथ, सम्प्रदाय के प्रमुख साधु-संतों समाज, जीवन के सभी गतिविधियों के उत्कृष्ट सफल

उद्यमी, कलाकार, प्रशासनिक, सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक जगत के विशिष्ट क्षेत्रों के गणमान्य महानुभाव उपस्थित रहे।

संपूर्ण अयोध्या नगरी का विकास उत्तर प्रदेश सरकार व भारत सरकार के सहयोग से अंतरराष्ट्रीय स्तर का विकसित किया जा रहा है। अयोध्या नगर के 84 कोसी परिक्रमा मार्ग का चौड़ीकरण, प्रकाश व्यवस्था, रिंग रोड, अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, बस स्थानक, पर्यटक सुविधा केंद्र, रेलवे स्टेशन, विश्राम गृह आदि के साथ सरयू के सुन्दर घाटों का पुनर्निमाण, जल क्रूज, अतिथिशाला, सब निर्मित हो चुके हैं। 2 किलोमीटर का धर्म पथ के 85 दीवारों पर भित्ति चित्र से रामचरितमानस के अध्याय, प्रभु श्री राम की जीवन गाथा का चित्रण हो रहा है। लखनऊ-गोरखपुर राष्ट्रीय राजमार्ग संख्या 27 पर साकेत पेट्रोल पम्प से लेकर लता मंगेशकर चौक तक के मार्ग को धर्मपथ का नाम दिया गया है। 2 किमी लम्बा यह रास्ता भविष्य में हाईवे से राम जन्म भूमि को जोड़ने वाला प्रभावी मार्ग होगा। प्राण प्रतिष्ठा के तीन आयाम - अक्षत कार्यक्रम, रामोत्सव कार्यक्रम और प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम थे।

अधिवास प्रक्रिया एवं आचार्य : सामान्यत : प्राण-प्रतिष्ठा समारोह में सात अधिवास होते हैं और न्यूनतम तीन अधिवास अभ्यास में होते हैं। समारोह के अनुष्ठान की सभी प्रक्रियाओं का समन्वय, समर्थन और मार्गदर्शन करने वाले 121 आचार्य रहे। श्री गणेशवर शास्त्री द्रविड़ सभी प्रक्रियाओं की निगरानी, समन्वय और दिशा-निर्देशन, तथा काशी के श्री लक्ष्मीकांत दीक्षित मुख्य आचार्य उपस्थित रहे।

इस तरह प्राण प्रतिष्ठा कार्यक्रम में देशभर के 4 वेदों, 6 शाखाओं यथा वैष्णव, शैव, शाक्त, बौद्ध, जैन, सिख के आचार्य गण थे। इस अवसर पर एक हजार एक सौ ग्यारह शंखों की ध्वनि से रामनगरी गुंजायमान हुई। जिसमें उत्तर मध्य क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र और इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केन्द्र का भी सहयोग रहा। रामचरण पादुका यात्रा के जरिए भारत को एक सूत्र में पिरोने का प्रयास वंदनीय है। यह यात्रा राम वन गमन पथ से सांस्कृतिक झांकियों के माध्यम से श्री राम के आदर्श को दिखाएगी। श्री राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र की ओर से भारत के प्रत्येक प्रान्त, जिला, नगर (खण्ड व ग्रामों तक चावल के अक्षत से प्रत्येक परिवार एक जीवंत सम्पर्क कर आमंत्रण दिया गया।

इस तरह यह महा जनसंपर्क अभियान विश्व का अद्भुत सम्पर्क अभियान हुआ। सामाजिक संगठनों ने इसमें बढ़-चढ़ भाग लिया। विभिन्न सामाजिक संगठनों ने लगभग 5 लाख गांवों तक संपर्क किया। 22 जनवरी के बाद भी 48 दिनों तक 7 मार्च शिवरात्रि तक अभियान चलेगा। मण्डल पूजन, मण्डलाभिषेक पूजा होगी जिसमें भारतीय एवं एक प्रवासी भारतीय यजमान होंगे। केन्द्र एवं राज्य सरकार 30.5 हजार करोड़ रुपये की लागत से 178 परियोजनाओं पर कार्य कर रही है। निजी क्षेत्र भी अयोध्या के उन्नयन में सक्रिय है। 25 हजार भक्त 35 एकड़ जमीन पर पक्की आवास व्यवस्था में रह सकेंगे। अयोध्या को सांस्कृतिक राजधानी बनाने का लक्ष्य है। सांस्कृतिक, सक्षम, आधुनिक, सुगम्य, सुरम्य, भावनात्मक स्वच्छ एक आयुष्मान अयोध्या बनाने में सभी का प्रयास हो रहा है। अयोध्या के मठ, मंदिर व आश्रमों को भव्य रूप दिया जा रहा है। वैभवशाली गुरुद्वारों के निर्माण किये गये हैं। कुण्ड, तालाब, दीवार, सड़क, चौराहे सब स्वच्छ और स्मार्ट सिटी जैसे बनाये जा रहे हैं। त्वरित कनेक्टिविटी सहित सोलर सिटी बनाने की पहल हो चुकी है। 25 एकड़ भूमि पर भारत के सभी मंदिरों का प्रतिरूप बनेगा। आने वाले 5 वर्षों में अयोध्या दुनिया को आकर्षित करेगी।

श्रीराम जन्मभूमि मंदिर की विशेषताएं

- कुल क्षेत्रफल : 2.7 एकड़ ♦ कुल निर्मित क्षेत्र : 57,400 वर्ग फीट।
- मंदिर की कुल लंबाई : 360 फीट ♦ मंदिर की कुल चौड़ाई : 235 फीट।
- शिखर सहित मंदिर की कुल ऊंचाई : 161 फीट ♦ मंजिलों की कुल संख्याः 3।
- प्रत्येक मंजिल की ऊंचाई : 20 फीट ♦ मंदिर के भूतल में स्तंभों की संख्याः 160।
- मंदिर के प्रथम तल में स्तंभों की संख्या : 132।
- मंदिर की दूसरी मंजिल में स्तंभों की संख्या : 74।
- मंदिर में चबूतरे एवं मंडपों की संख्या : 5।
- 5 मंडप में नृत्य मंडप, रंग मंडप, सभा मंडप, प्रार्थना मंडप व कीर्तन मंडप।
- मंदिर में कुल 44 द्वार होंगे।
- मुख्य गर्भगृह में प्रभु श्री राम का बालरूप प्रथम तल पर।
- मंदिर में प्रवेश पूर्व दिशा से, 32 सीढ़ियां चढ़कर सिंहद्वार से होगा।
- मंदिर के चारों ओर आयताकार परकोटा रहेगा।
- चारों दिशाओं में इसकी कुल लंबाई 732 मीटर तथा चौड़ाई 14 फीट।
- परकोटा के चारों कोनों पर सूर्यदेव, मां भगवती, गणपति व भगवान शिव को समर्पित मंदिर हैं।
- उत्तरी भुजा में मां अन्नपूर्णा, व दक्षिणी भुजा में हनुमान जी का मंदिर रहेगा।
- मंदिर के समीप पौराणिक काल का सीताकूप विद्यमान रहेगा।
- दक्षिण पश्चिमी भाग में नवरत्न कुबेर टीला पर भगवान शिव के प्राचीन मंदिर का जीर्णोद्धार किया गया है एवं तथा वहां जटायु प्रतिमा की स्थापना की गई है।

कक्करिसी नाटकम शिव-पार्वती का आख्यान

डॉ. वेद प्रकाश भारद्वाज
वरिष्ठ पत्रकार एवं कलाविद

भगवान शिव की पार्वती और गंगा के साथ पृथ्वी भ्रमण की कथा पर आधारित कक्करिसी नाटकम नृत्य नाटिका है। पौराणिक आख्यान के साथ ही समकालीन सामाजिक स्थितियों पर व्यंग्य करती यह नृत्य नाटिका लोक संस्कृति का अभिन्न हिस्सा है। इसे लोक का समकालीन आख्यान कहा जा सकता है।

अपनी सामाजिक जागरूकता के साथ सांस्कृतिक परंपराओं का पालन केरल के सामाजिक जीवन की विशेषता है। केरल की लोक कलाओं और साहित्य के साथ ही शास्त्रीय कलाओं और आधुनिक लेखन में भी हास्य और व्यंग्य की प्रधानता रही है। इसका एक बड़ा कारण सामाजिक संरचना में व्याप्त विषमताएं हैं। इन विषमताओं पर लोक कलाओं में प्रहार किया जाता है। केरल की नृत्य नाटिका कक्करिसी नाटकम ऐसी ही लोक कला है। भगवान शिव के पार्वती और गंगा के साथ भेष बदल कर पृथ्वी के भ्रमण के वृत्तांत पर आधारित यह नृत्य नाटिका इस अर्थ में भी अनोखी है कि इसमें दर्शकों की अप्रत्यक्ष भूमिका रहती है, क्योंकि इसके कुछ पात्र दर्शकों में बैठते हैं। मंचन की इसी विधि से इसमें व्यंग्य को उभारना आसान हो जाता है। नाटक के प्रमुख पात्र भी दर्शक समूह से निकल कर मंच पर आते हैं।

लोक संस्कृति का तात्पर्य स्थानीय स्तर पर की जाने वाली पारंपरिक प्रथाओं और अनुष्ठानों से है। प्रत्येक क्षेत्र की अपनी लोक संस्कृति और लोकप्रिय संस्कृति होती है। इसकी उत्पत्ति मुख्यतः ग्रामीण क्षेत्रों में किये जाने वाले बहुत पुराने पारंपरिक अनुष्ठानों से होती है। केरल राज्य की उत्कृष्ट संस्कृति भारतीय और द्रविड़ दोनों शैलियों का मिश्रण है। केरल की संस्कृति में शास्त्रीय कलाओं से अधिक लोक कलाओं का महत्व है, क्योंकि वही समाज को जीवंत रखती हैं। कक्करिसी नाटकम इस दृष्टि से उल्लेखनीय है कि इसने समाज के विभिन्न वर्गों को सामाजिक स्तर पर चेतन किया है। केरल की लोक संस्कृति में पारंपरिक मान्यताएं, रीति-रिवाज, और प्रदर्शनकारी कलाएं शामिल हैं। केरल की संस्कृति यहां रहने वाले लोगों के व्यवहार और विचारों की अभिव्यक्ति में झलकती है। भारत की लोक संस्कृति मूलतः कृषि पर आधारित है। केरल में भी अनेक ऐसे लोक उत्सव व कलाएं हैं जिनका कथानक कृषि होता है। पर इसके साथ ही ऐसी प्रदर्शनकारी कलाएं हैं जिनमें सामाजिक विषयों को केंद्र में रखा जाता है। अन्य समाज के समान ही केरल का समाज भी वर्गगत भेदभाव का शिकार है। इसीलिए कक्करिसी नाटकम जैसी लोक प्रदर्शनकारी कलाओं में, जिनमें समाज के उच्च वर्ग का वर्चस्व नहीं है, सामाजिक भेदभाव और साधारण जन की पीड़ा को स्वर देना आसान हो जाता है। इसका एक बड़ा कारण यह भी है कि इस नृत्य नाटिका का आधार भगवान शिव की पृथ्वी की यात्रा जरूर है, पर उसमें लोक अनुभवों और अभिव्यक्तियों की प्रधानता होती है। इसका कथानक भी कोई स्थिर और संकीर्ण नहीं है।

कक्करिसी नाटकम में पौराणिक कहानियों के साथ ही समकालीन स्थानीय मुद्दों पर टिप्पणियां शामिल होती हैं। मुख्य पात्र सुंदरन कक्कलन है, जिसे शिव का परिवर्तित रूप माना जाता है। उनके साथ उनकी पत्नी पार्वती कक्कथी के रूप में और गंगा हैं। खानाबदोश पोशाक पहनकर कक्कलन और कक्कथी मंच पर गायन करते हुए पहुंचते हैं। कक्कलन का पेशा लोक चिकित्सा है, जबकि उनकी पत्नियां हस्तरेखा और चेहरा पढ़कर भाग्य बताती हैं। शो में अन्य पात्र, स्थानीय जमींदार थम्ब्रन और वेदान (एक समुदाय) होते हैं। नाटक थम्ब्रन के साथ बातचीत के रूप में आगे बढ़ता है जो दर्शकों के बीच बैठा होता है। भगवान शिव, पार्वती और गंगा पृथ्वी पर विभिन्न लोगों से मिलते हैं जिनमें शासक भी होते हैं और शासित भी। इसी बातचीत में स्थानीय कथाओं का समावेश किया जाता है और तात्कालिक राजनीतिक व सामाजिक स्थितियों पर सांकेतिक रूप में व्यंग्यात्मक टिप्पणियां की जाती हैं। कक्करिसी नाटकम का मूल उद्देश्य तो मनोरंजक ही माना जाता है, लेकिन आधुनिक समय में इसमें कई बदलाव देखने को मिल रहे हैं। इस नृत्य नाटिका में एक कहानी में कई दूसरी कहानियां को मिलाकर पूरा कथानक बुना जाता है। इसके लिए पौराणिक आख्यानों के साथ स्थानीय लोक कथाओं को भी शामिल किया जाता है। इसकी भाषा को भी सहज रखा जाता है जिससे आम आदमी खुद को इससे जोड़ सके। इसमें संगीत के लिए हारमोनियम, मृदंगम और गणचिरा जैसे वाद्ययंत्रों का प्रयोग होता है। कलाकारों के मेकअप पर विशेष ध्यान रखा जाता है। ■

प्राण प्रतिष्ठा से विकास की नयी गाथा

प्रह्लाद सबनानी
सेवानिवृत्त उप महाप्रबंधक,
भारतीय स्टेट बैंक

अयोध्या में प्रभु श्रीराम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा के बाद अयोध्या नगरी विश्व के अति महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों के पटल पर है। इसका अब भारत की आर्थिक प्रगति पर भी बहुत बड़ा असर होने जा रहा है। अतः अब ऐसी आशा की जानी चाहिए कि भारत में निवासरत विभिन्न मत, पंथ मानने वाले नागरिक एक होकर राष्ट्र के विकास की गति को आगे बढ़ाने में अपनी महती भूमिका का निर्वहन करेंगे।

अयोध्या में प्रभु श्रीराम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा सम्पन्न हो गई है और अब अयोध्या नगरी विश्व के अति महत्वपूर्ण धार्मिक स्थलों के पटल पर है। इसका अब भारत की आर्थिक प्रगति पर भी बहुत बड़ा असर होने जा रहा है। स्थानीय स्तर पर तो अब भारत के नए भविष्य की एक नई शुरुआत होने जा रही है। प्राण प्रतिष्ठा के बाद भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भी अपने उद्बोधन में कहा है कि प्रभु श्रीराम सभी के हैं अतः यह भारत के लिए एक नए अध्याय की शुरुआत है। प्रत्येक भारतीय रामायण पढ़ता है एवं अयोध्या के महत्व को भी समझता है। यह प्रभु श्रीराम का जन्म स्थल है और यही प्रभु श्रीराम 500 वर्षों के बाद अपने घर आए हैं। प्रभु श्रीराम भारत के कण-कण में बसते हैं। अतः अब ऐसी आशा की जानी चाहिए कि भारत में निवासरत विभिन्न मत, पंथ मानने वाले नागरिक एक होकर भारत के विकास की गति को आगे बढ़ाने में अपनी महती भूमिका का निर्वहन करेंगे।

प्रभु श्रीराम केवल भारत ही नहीं, बल्कि विश्व के कई अन्य देशों में भी पूज्य हैं। कई देशों ने तो रामायण को अपनी भाषा में भी लिखा है। इस दृष्टि से रामायण के कई रूप हैं। थाईलैंड, कम्बोडिया, लाओस, चीन, म्यांमार, इंडोनेशिया, वियतनाम आदि देशों में रामायण के स्थानीय रूप मिलते हैं। पूरे विश्व में कुल मिलाकर 300 भाषाओं में रामायण उपलब्ध है। उत्तरी थाईलैंड में एक शहर का नाम ही अयोध्या की तरह अयुथ्या है। यह प्राचीन काल में एशियन थाई राज्य की राजधानी रहा है। कालांतर में जिन देशों में भारतीय मूल के नागरिक गए हैं, वहां रामायण भी पहुंचा है। जैसे कैरेबियन देशों में, अफ्रीकी देशों में, फिजी आदि देशों में प्रभु श्रीराम विद्यमान रहे हैं। और यहां के नागरिक, भारतीय मूल के नागरिकों सहित, प्रभु श्रीराम की पूजा करते हैं। अब भारत इन सभी देशों के साथ अपने राजनीतिक एवं सामरिक रिश्तों को मजबूत कर सकता है और इन देशों में रह रहे नागरिकों को भारत एक तरह से अपने देश की तरह दिखाई देने जा रहा है।

दूसरे, अब भारत में धार्मिक पर्यटन बढ़ने की अपार संभावनाएं बन गई हैं। भारत में अभी तक सबसे अधिक पर्यटक पड़ोसी देश बांग्लादेश से आते हैं, इसके बाद पश्चिमी देशों से पर्यटक भारत आते हैं, जैसे अमेरिका, ब्रिटेन, कनाडा, रूस, ऑस्ट्रेलिया, फ्रांस, जर्मनी आदि। इसके

बाद एशिया के अन्य देशों से पर्यटक भारत आते हैं, जैसे मलेशिया, श्रीलंका एवं थाईलैंड। जबकि इन एशियाई देशों में प्रभु श्रीराम में आस्था रखने वाले नागरिकों की बहुत बड़ी संख्या निवास करती है। अतः अब इन एशियाई देशों से भारत में पर्यटकों का आना बढ़ेगा। इन समस्त देशों के नागरिक प्रभु श्रीराम के बचपन की कहानियां पढ़कर बड़े हुए हैं, अब ये लोग निश्चित ही भारत में अयोध्या आकर प्रभु श्रीराम के भव्य मंदिर के दर्शन करने के लिए आएंगे।

धार्मिक पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भारत सरकार ने धरातल पर काम करना शुरू भी कर दिया है। एक रामायण सर्किट रूट को विकसित किया जा रहा है। इस रूट पर विशेष रेलगाड़ियां भी चलाए जाने की योजना बनाई गई है। यह विशेष रेलगाड़ी 18 दिनों में 8000 किलोमीटर की यात्रा सम्पन्न करेगी, इस विशेष रेलगाड़ी के इस रेलमार्ग पर 18 स्टॉप होंगे। यह विशेष रेलमार्ग प्रभु श्रीराम से जुड़े ऐतिहासिक नगरों अयोध्या, चित्रकूट एवं छतीसगढ़ को जोड़ेगा। अयोध्या में नवनिर्मित प्रभु श्रीराम मंदिर वैश्विक पटल पर इस रूट को भी रखेगा।

विश्व के कई अन्य देश धार्मिक पर्यटन के माध्यम से अपनी अर्थव्यवस्थाएं सफलतापूर्वक मजबूत कर रहे हैं। सऊदी अरब धार्मिक पर्यटन से प्रति वर्ष 22,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर अर्जित करता है। सऊदी अरब इस आय को आगे आने वाले समय में 35,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर तक ले जाना चाहता है। मक्का में प्रतिवर्ष 2 करोड़ लोग पहुंचते हैं, जबकि मक्का में गैर मुस्लिम के पहुंचने पर पाबंदी है। इसी प्रकार, वेटिकन सिटी में प्रतिवर्ष 90 लाख लोग पहुंचते हैं। इस तरह धार्मिक पर्यटन से अकेले वेटिकन सिटी को प्रतिवर्ष लगभग 32 करोड़ अमेरिकी डॉलर की आय होती है, और अकेले मक्का शहर को 12,000 करोड़ अमेरिकी डॉलर की आमदनी होती है। अयोध्या में तो किसी भी धर्म, मत, पंथ मानने वाले नागरिकों पर किसी भी प्रकार की पाबंदी नहीं है। अतः अयोध्या पहुंचने वाले श्रद्धालुओं की संख्या 5 से 10 करोड़ प्रतिवर्ष तक जा सकती है। फिर अकेले अयोध्या नगरी को होने वाली आय का अनुमान तो सहज रूप से लगाया जा सकता है। अभी अयोध्या आने वाले श्रद्धालु अयोध्या में रुकते नहीं थे। प्रातः अयोध्या पहुंचकर प्रभु श्रीराम के दर्शन कर शाम तक वापस चले जाते थे, परंतु अब अयोध्या को इतना आकर्षक रूप से विकसित किया गया है कि श्रद्धालु 3 से 4 दिन रुकने का प्रयास करेंगे। एक अनुमान के अनुसार, प्रत्येक पर्यटक लगभग 6 लोगों को प्रत्यक्ष अथवा परोक्ष रूप से रोजगार उपलब्ध कराता है। इस संख्या के हिसाब से तो लाखों नए रोजगार के अवसर अयोध्या में उत्पन्न होने जा रहे हैं। अयोध्या के आसपास विकास का एक नया दौर शुरू हो गया है। यह कहना भी अतिशयोक्ति नहीं होगा कि अब अयोध्या के रूप में वेटिकन एवं अन्य प्रसिद्ध वैश्विक स्थलों का जवाब भारत में खड़ा होने जा रहा है।

पूरे देश से धार्मिक पर्यटक अयोध्या पहुंचना शुरू हो गए हैं। यह हर्ष का विषय है कि रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के अगले दिन (23 जनवरी) ही 5 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने प्रभु श्रीराम के दर्शन किये हैं।

जेफरीज नामक एक बड़ी अंतरराष्ट्रीय ब्रोकरेज कम्पनी ने बताया है कि अयोध्या में निर्मित प्रभु श्रीराम के मंदिर से भारत की आर्थिक सम्पन्नता बढ़ने जा रही है। दिनांक 22 जनवरी 2024 को अयोध्या में सम्पन्न हुए प्रभु श्रीराम मंदिर में प्राण प्रतिष्ठा समारोह के बाद स्थानीय कारोबारी अपना उज्ज्वल भविष्य देख रहे हैं। अयोध्या नगरी अब धार्मिक पर्यटन का हब बनने जा रही है। अयोध्या अब दुनिया का सबसे बड़ा तीर्थ क्षेत्र बन जाएगा। धार्मिक पर्यटन की दृष्टि से अब अयोध्या दुनिया का सबसे बड़ा केंद्र बनने जा रहा है। जेफरीज के अनुसार अयोध्या में प्रति वर्ष 5 करोड़ से अधिक पर्यटक आ सकते हैं। अभी अयोध्या में केवल 17 बड़े होटल हैं, इनमें कुल मिलाकर 590 कमरे उपलब्ध हैं। लेकिन, अब 73 नए होटलों का निर्माण किया जा रहा है। इनमें से 40 होटलों का निर्माण कार्य प्रारम्भ भी हो चुका है। अभी तक नए एयरपोर्ट, रेलवे स्टेशन, टाउनशिप और रोड कनेक्टिविटी में सुधार जैसे कामों पर 85,000 करोड़ रुपए का निवेश किया गया है। इस निवेश का स्थानीय अर्थव्यवस्था पर बड़ा असर दिखाई देने जा रहा है। शीघ्र ही अयोध्या वैश्विक स्तर पर धार्मिक और आध्यात्मिक पर्यटन केंद्र के रूप में उभरेगा। इससे होटल, एयरलाइन, हॉस्पिटलिटी, ट्रैवल, सीमेंट जैसे क्षेत्रों को बहुत बड़ा फायदा होने जा रहा है। भारत के विभिन्न शहरों से 1000 के आसपास नई रेल अयोध्या के लिए चलाए जाने के प्रयास किए जा रहे हैं। पूरे देश से धार्मिक पर्यटक अयोध्या पहुंचना शुरू हो गए हैं। यह हर्ष का विषय है कि रामलला की प्राण प्रतिष्ठा के अगले दिन (23 जनवरी) ही 5 लाख से अधिक श्रद्धालुओं ने प्रभु श्रीराम के दर्शन किये हैं। इस प्रकार कुल मिलाकर भारत भी अब वैश्विक पटल पर अपनी धाक जमा सकता है। इस धार्मिक आयोजन में 100 से अधिक देशों के विशिष्ट अतिथियों को आमंत्रित किया गया था। इनमे से कई विशिष्ट अतिथियों ने अपनी शुभकामनाएं व्यक्त करते हुए लिखा है कि वे शीघ्र ही प्रभु श्रीराम मंदिर के दर्शन के लिए अयोध्या जाएंगे। ■

साहित्य में राम

काव्य रूप हो, कथा रूप हो, लोक साहित्य हो या कला, राम कथा किसी न किसी रूप में लोक जीवन से जुड़ी रही है। देश की सीमाएं लांघते हुए राम कथा का स्वरूप बदलता रहा है, किन्तु मूल वही बुराई पर अच्छाई की जीत का दर्शन।

प्रियम्बरा
वरिष्ठ पत्रकार

रामकथा सुन्दर कर तारी।
संशय बिहग उड़व निहारी।।

रामकथा हमारी संस्कृति और परम्परा का अभिन्न हिस्सा है। काव्य रूप हो, कथा रूप हो, लोक साहित्य हो या कला, राम कथा किसी न किसी रूप में लोक जीवन से जुड़ी रही है। देश की सीमाएं लांघते हुए राम कथा का स्वरूप बदलता रहा है, किन्तु मूल वही बुराई पर अच्छाई की जीत का दर्शन। संपूर्ण विश्व में तीन सौ से ज्यादा रामकथाएं प्रचलित हैं। इन देशों में रामकथा अलग-अलग तरह से सुनाई जाती हैं। चीन, मलेशिया, कंबोडिया, इंडोनेशिया, बांग्लादेश, भूटान, श्रीलंका, बाली, जावा, सुमात्रा, नेपाल, लाओस, और थाईलैंड आदि देशों की लोक-संस्कृति एवं ग्रंथों में राम कथा का सजीव वर्णन मिलता है। यहां राम कथाएं गाई जाती हैं। अनेक जगह रामलीला का आयोजन भी होता है। इंडोनेशिया में राम कथा को ककनिन, या काकावीन रामायण के नाम से जाना जाता है। इंडोनेशिया में रामायण का गहरा प्रभाव है। देश के कई क्षेत्रों में पत्थरों पर रामायण के चित्र उकेरे गए हैं।

वहीं चीन की बात करें तो बौद्ध धर्म ग्रंथ त्रिपिटक के चीनी संस्करण में रामायण पर आधारित दो रचनाएं मिलती हैं - 'अनामकं जातकम्' और 'दशरथ कथानम्'। 'अनामकं जातकम्' में किसी पात्र का नामोल्लेख नहीं है, किंतु कथा के रचनात्मक स्वरूप से ज्ञात होता है कि यह रामायण पर आधारित है। इस कथा में राम वन गमन, सीता हरण, सुग्रीव मैत्री, लंका विजय आदि प्रमुख घटनाओं का स्पष्ट संकेत मिलता है। इसी प्रकार विभिन्न देशों ने अपनी संस्कृति और परम्पराओं के अनुरूप राम कथा को ग्रहण किया। ये राम का आकर्षण ही है जो उनके अलौकिक व्यक्तित्व के मोहपाश में बंधे ये सभी देश राम को अपना मानते हैं और रामकथा से स्वयं को जोड़ते हैं। राम कथा लोगों को इसलिए भी प्रिय है, क्योंकि राम का चरित्र आदर्श पुत्र, आदर्श शिष्य, आदर्श भाई, आदर्श मित्र, आदर्श वीर और आदर्श राजा के रूप में सभी को आकर्षित करता है। राम जन-जन के राम हैं।

समय-समय पर रामकथा और उसके किरदारों को आधार बनाकर साहित्य रचा गया। वाल्मीकि द्वारा रचित रामायण को सबसे पुराना रामायण माना जाता है। किंतु मान्यता है कि उनसे पहले हनुमान जी ने एक शिला पर अपने नाखूनों से रामायण लिखी थी जिसे हनुमद रामायण कहा गया। वाल्मीकि रामायण ही सबसे पुराना प्राप्त रामकथा महाकाव्य है। इस महाकाव्य के आधार पर ही रामकथा पर आधारित अन्य साहित्य लिखे गए। इसके बाद तुलसीदास के रामचरितमानस का स्थान आता है। वाल्मीकि रामायण, कंबन रामायण, रामचरितमानस, अद्भुत रामायण, अध्यात्म रामायण, आनंद रामायण हमेशा से प्रचलित और लोकप्रिय रहे हैं। भारतीय संस्कृति की पहुंच जहां तक रही राम कथा का प्रचलन वहां

तक हुआ। चीन में रामायण का एक अलग रूप है, तो वहीं तिब्बत में रामकथा को किंरस-पुंस-पा कहा जाता है। मलेशिया में रामकथा पर आधारित एक विस्तृत रचना है 'हिकायत सेरीराम'। हिकायत सेरीराम की कथा भी प्रचलित रामकथा से भिन्न है। श्रीलंका में 'जानकी हरण' के रूप में राम कथा प्रचलित है। अरब से लेकर यूरोप तक के साहित्य में राम कथा का कोई न कोई रूप मिलता है।

राम कथा के मोह पाश में बंधे बेल्जियम के कामिल बुल्के ने भारत में रहकर 'रामकथा का विकास' विषय पर शोध किया। उन्होंने अपने शोध ग्रंथ 'रामकथा उत्पत्ति और विकास' में रामायण और रामकथा के एक हजार से ज्यादा प्रतिरूप होने की बात कही। यह शोध पत्र हिन्दी में है जिसे कामिल बुल्के ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय में डी-फ़िल के लिए डॉ. माताप्रसाद गुप्त के निर्देशन में प्रस्तुत किया था। सामग्री की पूर्णता के अतिरिक्त कामिल बुल्के ने अन्य विद्वानों के मत की यथास्थान परीक्षा की है तथा कथा के विकास के सम्बन्ध में अपना तर्कपूर्ण मत भी दिया है। यह खोजपूर्ण रचना अपने ढंग की पहली और अनूठी है। 'रामकथा : उत्पत्ति और विकास' चार भागों में विभक्त है। प्रथम भाग में 'प्राचीन राम कथा साहित्य' का विवेचन है। इसके अन्तर्गत पांच अध्यायों में वैदिक साहित्य और रामकथा, वाल्मीकि कृत रामायण, महाभारत की रामकथा, बौद्ध रामकथा तथा जैन रामकथा संबंधी सामग्री की पूर्ण परीक्षा की गई है। द्वितीय भाग का संबंध रामकथा की उत्पत्ति से है। ग्रंथ के तृतीय भाग में 'अर्वाचीन रामकथा साहित्य का सिंहावलोकन' है। इसमें भी चार अध्याय हैं। पहले और दूसरे अध्याय में संस्कृत के धार्मिक तथा ललित साहित्य में पाई जाने वाली रामकथा सम्बन्धी सामग्री की परीक्षा है। तीसरे अध्याय में आधुनिक भारतीय भाषाओं के रामकथा सम्बन्धी साहित्य का विवेचन है। इससे हिंदी के अतिरिक्त तमिल, तेलुगु, मलयालम, कन्नड़, बंगाली, कश्मीरी, सिंहली आदि समस्त भाषाओं के साहित्य की छान-बीन की गई है। चौथे अध्याय में विदेश में पाये जाने वाले राम कथा के बारे में बताया गया है और इस सम्बन्ध में तिब्बत, खोतान, हिंदेशिया, हिन्दचीन, श्याम, ब्रह्मदेश आदि में उपलब्ध सामग्री का पूर्ण परिचय एक ही स्थान पर दिया गया है। अंतिम भाग में रामकथा सम्बन्धी एक-एक घटना को लेकर उसका पृथक-पृथक विकास दिखाया गया है।

समय-समय पर विदेशी विद्वानों ने रामायण पर शोध और उसका अनुवाद भी किया है। जे फेनिचियो ने 'लिब्रो डा सैटा' नाम से एक पुस्तक लिखी जिसमें अन्य कथाओं के साथ रामकथा का वर्णन भी था। वहीं भारत में कुछ वर्ष व्यतीत करने वाले डच पादरी ए. रोजेरियस ने 'द ओपेन रोरे' नाम से पुस्तक लिखी जिसमें वाल्मीकि रामायण से प्रेरित राम कथा का वर्णन था। इसी प्रकार फ्रेंच, लैटिन,

राम कथा के मोह पाश में बंधे बेल्जियम के कामिल बुल्के ने भारत में रहकर 'रामकथा का विकास' विषय पर शोध किया। उन्होंने अपने शोध ग्रंथ 'रामकथा उत्पत्ति और विकास' में रामायण और रामकथा के एक हजार से ज्यादा प्रतिरूप होने की बात कही।

रशियन और इटैलियन में भी राम कथा का अनुवाद किया गया। विलियम केटी ने अंग्रेजी में रामायण का अनुवाद शुरू किया, जिसे बाद में मार्शमैन, ग्रिफिथ, व्हीलर ने पूरा किया।

भारतीय भाषाओं में रामकथा की बात करें तो आधुनिक युग में राम कथा साहित्य अत्यंत व्यापक है। राम के चरित्र को लेकर लिखे गए साहित्य की एक लम्बी परम्परा है। आधुनिक काल का रामकथा साहित्य बहुआयामीय है। इस काल में अनेक विधाओं में राम कथा साहित्य को कलमबद्ध किया गया तथा अनेक साहित्यकारों ने राम कथा पर अपनी लेखनी चलाई।

वर्तमान की बात करें तो रामायण और महाभारत जैसे महाकाव्य को आधार बनाकर उपन्यास लेखन की परंपरा को प्रारंभ करने का श्रेय सुप्रसिद्ध उपन्यासकार नरेन्द्र कोहली को जाता है। अपने उपन्यासों के माध्यम से उन्होंने महाकाव्यों को समझने की एक नवीन दृष्टि प्रदान की। उनकी रचनाओं का विभिन्न भारतीय भाषाओं में अनुवाद हुआ। उन्होंने रामकथा को आधार बनाकर उपन्यास की श्रृंखला चलाई, जिसे पाठकों द्वारा खूब पसंद किया गया। अमिश त्रिपाठी ने भी रामकथा को रोचक तरीके से प्रस्तुत किया। 2015 में प्रकाशित राम चंद्र सीरीज की पहली किताब 'सायन ऑफ इक्ष्वाकु' ने बेस्ट पोपुलर अवार्ड की श्रेणी में क्रॉसवर्ड बुक अवार्ड प्राप्त किया। इसी से अंदाजा लगाया जा सकता है कि इस पुस्तक को पाठकों ने कितना पसंद किया। इसके बाद इसी श्रृंखला पर आधारित उनकी दूसरी किताब 'सीता रू वारियर ऑफ मिथिला' रही। इसी श्रृंखला में 'रावणरू एनिमी ऑफ आर्याव्रत' उपन्यास भी रहा।

राम के लिए हमेशा 'स्वहित' से ज्यादा, परहित, समाज हित और राज्यहित मायने रखता था। राम का रामत्व उनकी संघर्षशीलता में निहित है। राम का संघर्ष आम जन को संघर्ष करने की प्रेरणा देता है। राम तमाम विकट परिस्थितियों का मुस्कुराते हुए सामना करते हैं, वे हारते नहीं, बिलखते नहीं। लोक के हृदय में युगों-युगों तक वास करने के पीछे राम की यही आदर्शपूर्ण छवि रही होगी जो मनुष्य अपने आराध्य में चाहता है।

टीवी और फिल्म, कंम्प्यूटर, इंटरनेट, मोबाइल, सोशल मीडिया के प्रचलन के बाद भी राम कथा लोगों को इस प्रकार आकर्षित करती है कि वे उनकी कथा को बार-बार सुनने को, देखने को लालायित रहते हैं। रामायण को समय-समय पर टेलीविज़न पर प्रस्तुत भी किया जाता रहा है, जिसने टीआरपी के सारे रिकार्ड्स भी तोड़े। ऐसा इसीलिए है, क्योंकि राम का सारा जीवन आदर्श के सबसे ऊंचे मानकों पर आधारित है।

"हरि अनंत हरि कथा अनंता।
कहहिं सुनहिं बहुबिधि सब संता।।

रामकथा जनजीवन में, समाज में इस प्रकार व्याप्त है कि साहित्य में उसकी उपस्थिति अवश्यम्भावी हो जाती है। ■

कुटुंब प्रबोधन के प्रेरक श्रीराम

शिवेश प्रताप
तकनीकी-प्रबंध सलाहकार

जब हम प्रभु राम के जीवन को गहराई से देखते हैं, तो पाते हैं कि उनके चरित्र को मर्यादा पुरुषोत्तम बनाने में संपूर्ण राम परिवार एवं मित्रादि का योगदान है। जिसमें राजा दशरथ से लेकर वन में हनुमान, सुग्रीव से लेकर लंका में विभीषण तक आते हैं। राम रूपी विराट व्यक्तित्व में राम परिवार का भाव निहित है। राम अपनी सम्पूर्ण वनयात्रा में अपना परिचय इक्ष्वाकुवंशी या दशरथ नंदन के रूप में देते हैं, क्योंकि सनातन धर्म परिवार को समाज की आधारभूत इकाई मानता है। व्यक्ति को सामाजिक इकाई मानना भ्रांति है और यह विमर्श औपनिवेशिक दौर में भारत में घुसपैठ कर गया। यही कारण है कि सामाजिक संगठनों द्वारा व्यापक स्तर पर कुटुंब प्रबोधन का कार्यक्रम चलाया जाता है। क्योंकि परिवार ही किसी राष्ट्र की आधारभूत सामाजिक आर्थिक एवं सांस्कृतिक इकाई होते हैं। पारिवारिक स्तर पर एकता और राष्ट्रीयता की भावना जागृत होने पर ही कोई राष्ट्र शक्तिशाली बन सकता है।

जिस प्रकार श्री राम रघुकुल व अयोध्या से मिले हुए संस्कारों से अपने संपूर्ण बनवास के दौरान पंचवटी, किष्किंधा से लेकर लंका तक को प्रभावित करते हैं, वैसे ही हर व्यक्ति अपने परिवार से मिलने वाले प्राथमिक संस्कारों के बल पर ही समाज को सुसंस्कृत, चरित्रवान, राष्ट्र के प्रति समर्पित और अनुशासित बनाने में अपनी महत्वपूर्ण

राम रूपी विराट व्यक्तित्व में समरसता एवं मर्यादा का भाव निहित है। पारिवारिक, सामाजिक और लौकिक जीवन के कर्तव्य परायणता में राम ने अपने आचरण और व्यवहार से जो मानक स्थापित किए, मानव उन्हीं मूल्यों को धारण कर समाज और राष्ट्र को रामराज्य की ओर अग्रसर कर सकता है।

भूमिका अदा करता है। इसलिए परिवारों को भारतीय संस्कृति की मूल अवधारणाओं से जोड़कर समाज को सशक्त बनाया जा सकता है।

कुटुंब प्रबोधन को बढ़ाने के कई माध्यम हैं जिसमें से सप्ताह में कम से कम एक बार हम परिवार के सदस्यों एवं मित्रों के साथ सहभोज अवश्य करें। सामाजिक संगठनों के अनुसार परिवार में जीवन जीने के चार मंत्र होने चाहिए, पहला, देशार्चन यानी देश को पूज्य मानना, दूसरा, सद्भाव यानी सभी के बीच सुंदर व्यवहार की स्थापना, तीसरा, ऋणमोचन अर्थात् सभी प्राकृतिक तथा मानवीय संसाधनों को कृतज्ञता के भाव से उपभोग करते हुए उसके ऋण को उतारने का भाव अर्थात् लोककल्याण। चौथा है, अनुशासन यानी स्वयं पर नियंत्रण का उत्तरदायित्व। क्योंकि अनुशासन के बिना कोई भी राष्ट्र अथवा समाज प्रगति नहीं कर सकता। अब अयोध्या के भव्य मंदिर में रामलला विराजमान हो गए हैं, तो क्यों ना राम परिवार को आदर्श मानकर मर्यादा पुरुषोत्तम राम के गुणों को स्वयं में धारित करने का प्रयास करें। क्योंकि यही विश्वगुरुता और रामराज्य की पहली सीढ़ी है।

रामचरितमानस एक ओर राम के जीवन चरित्र व मनुष्य जाति के अनुभवों का निचोड़ है, तो दूसरी ओर यह 'नाना पुराण निगमागम सम्मतं यद्' होकर सनातन धर्म के सभी मानक ग्रंथों का अर्क स्वरूप भी है। जिसे मानस के अंत में 'छहों शास्त्र सब ग्रन्थन को रस' कह कर दोबारा पुष्ट कर दिया गया है। मनुष्य से पुरुषोत्तम बनकर यानी मृत्यु से अमरत्व की ओर बढ़ने की यात्रा के पथ प्रदर्शक श्रीराम हैं। अपने भीतर छिपी संभावना और सुख-शांति की अभीप्सा को पूरा कर सकने की आकांक्षा के बीच, रामचरितमानस में राम इस मार्ग के संकेत हैं कि मनुष्य के स्वरूप को चरितार्थ करने और उससे ऊपर उठने और अपने भीतर निहित संभावनाओं को साकार करने का कोई लघुमार्ग नहीं हैं।

पारिवारिक, सामाजिक और लौकिक जीवन के कर्तव्य परायणता में राम ने अपने आचरण और व्यवहार से जो मानक स्थापित किए, उन मानकों में यह संभावना हमेशा निहित रही कि व्यक्ति का व्यवहार, परिस्थिति के अनुसार भले बदलता रहे, लेकिन उसका अंतरंग स्थिर रहे। मानव उन्हीं मूल्यों का प्रतिनिधित्व करे जो शाश्वत हो, जो मनुष्य

एवं समाज के लिए हमेशा उपयोगी और ऊंचा उठाने वाले हों। उदाहरण के लिए परिवार को ही लें, राम में परिवार के अनुशासन, सबके प्रति विश्वास, एक-दूसरे के सुखों और इच्छाओं का निर्वाह और उनके लिए त्याग की भावना का महत्व रहा है। इन मूल्यों का निर्वाह रामचरितमानस के हर प्रसंग में होता दिखाई देता है। क्षण भर में राजमुकुट धारण कर राजा राम बनने वाले बनवासी राम बनने हेतु बल्कल वस्त्र पहन लेते हैं और पिता के वचनों एवं माता कैकेयी के प्राप्त वरदान हेतु वन जाने हेतु निकल जाते हैं।

व्यक्तिगत जीवन में राम ने एक ओर मर्यादाओं की प्रतिष्ठा की, तो दूसरी ओर उन्होंने जहां जरूरी समझा वहां मान्यताओं में दखल भी दिया। शूर्पणखा का अंग-भंग, अहिल्या को पुनर्जीवन और प्रतिष्ठा, एक पत्नीव्रत, बाली एवं शबरी उद्धार, विभीषण को लंका का राज दे देना आदि कई प्रसंग हैं, जिनमें वह परंपरा से हटकर काम करते हैं। यह सब करते हुए वह धर्म-मर्यादा की स्थापना ही कर रहे होते हैं, क्योंकि मर्यादा की स्थापना ही धर्म की शाश्वतता को बनाये रखती है। यदि यज्ञाग्नि भी मर्यादा का उल्लंघन करे तो उसे जल के द्वारा नियंत्रित करने का विधान धर्म का ही है।

टूटते संयुक्त परिवारों का सहारा राम

इन दिनों जब ज्ञान परम्परा का एक पीढ़ी से दूसरी में प्रवाह बाधित हो गया है, तो राम का चरित्र, मूल्य, व्यवहार और आदर्शों की यशोगाथा को समेटे श्री रामचरितमानस/रामायण जीवन के आदर्शों का संविधान बन सकता है। आज बड़े-बड़े पारिवारिक सलाहकार अपनी सलाह में परिवारों में यही अंतिम सत्य बताते हैं कि परिवार वह इकाई है जहां आप तर्कों और जय-पराजय से समाधान नहीं पा सकते, अपितु त्याग के द्वारा कर्तव्य पालन करके ही सुख शांति प्राप्त करेंगे। यह मान्यता भारत में त्रेतायुग में ही प्रभु राम के जीवन से स्थापित हो चुकी थी।

राम परिवार के आदर्श-स्नेह, सहयोग, सद्भाव और विश्वास को आधार बनाकर आपसी संबंधों, कर्तव्यों और दायित्वों को समझा और निभाया जा सकता है। जब राम, लक्ष्मण और सीता वनवास संपन्न कर अयोध्या वापस आते हैं, तो माता कौशल्या ने मिलते ही सबसे पहले लक्ष्मण से आकुल होकर पूछा कि मुझे दिखाओ तुम्हें शक्ति कहां लगी थी, पुत्र तुम्हें कितनी वेदना से गुजरना पड़ा! लक्ष्मणजी ने इसका उत्तर दिया, 'वेदना राघवेन्द्रस्य केवलं व्रणिनो वयम' (वाल्मीकि रामायण) अर्थात हमें तो केवल घाव हुआ था, वेदना तो बड़े भाई राम को हुई थी। बस यही राम का सार है की सभी एक- दूसरे के भाव, प्रेम, हर्ष और विषाद में एकरस हो जाएं।

आज पश्चिमी मनोविज्ञान दबे स्वर में स्वीकार रहा है कि सुख-दुःख वास्तव में भौतिक संसाधनों पर निर्भर नहीं करते। सुख-दुःख मनुष्य की अनुभूति के ही परिणाम हैं, उसकी मान्यता, कल्पना एवं अनुभूति विशेष के ही रूप में सुख-दुःख का स्वरूप बनता है।

राम जी के छोटे भाई भरत जी का चरित्र तो ऐसा है कि कहीं-कहीं उनकी श्रद्धा, समर्पण और मर्यादा रूपी हिमालय के आगे रामजी लघु प्रतीत होते हैं। भाई की चरण पादुका से राज चलाना और स्वयं नंदीग्राम में भूमि पर सोना और पर्णकुटी में रहना। राम जी अपने भाई भरत को राजधर्म की सीख देते हुए कहते हैं कि,'मुखिआ मुखु सो चाहिए' यानि मुखिया मुख के समान होना चाहिए, जो स्वयं के पोषण या सुख में अकेला है, परन्तु विवेक पूर्वक सब अंगों का पालन-पोषण करता है। राम और भरत का चरित्र भरत-मिलाप प्रसंग में एक दूसरे के सामने ऐसे अडिग है कि तुलसीदास जी को लिखना पड़ता है 'धीर धुरंधर धीरजु त्यागा' यानि भरत जी के असीम त्याग और मर्यादा के समक्ष धैर्य की धुरी धारण करने वाले श्रीराम को भी अपना धीरज प्रेमाश्रुओं के सामने तोड़ देना पड़ता है।

सुख-दुःख की अनुभूति : आज पश्चिमी मनोविज्ञान दबे स्वर में स्वीकार रहा है कि सुख-दुःख वास्तव में भौतिक संसाधनों पर निर्भर नहीं करते। सुख-दुःख मनुष्य की अनुभूति के ही परिणाम हैं, उसकी मान्यता, कल्पना एवं अनुभूति विशेष के ही रूप में सुख-दुःख का स्वरूप बनता है। जैसा मनुष्य का भावना स्तर होगा उसी के रूप में सुख-दुःख की अनुभूति होगी। एक ओर जहाँ पश्चिमी संसार सुख को परिभाषित करने में भौतिक संसाधनों के अंतहीन दौड़ में लगा है, वहीं सनातन धर्म में सुख-दुःख का विमर्श एक साथ त्रेतायुग से होता आया है। हम मानते हैं कि सुख और दुःख दो भिन्न अवस्थाएं होते हुए भी एक-दूसरे के पूरक हैं। मृत्युशैय्या पर पड़े हुए दशरथ से मंत्री सुमंत्र कहते हैं;

जनम मरन सब दुख सुख भोगा।
हानि लाभ प्रिय मिलन बियोगा।।
काल करम बस होहिं गोसाई।
बरबस राति दिवस की नाईं।।

भगवान श्रीराम एवं उनके समाज का चिंतन केवल रावण को मारकर सीता माता की प्राप्ति तक सीमित कर देना उचित नहीं है, जैसा कि आज के डिजिटल विमर्श में चहुंओर दिखाई दे रहा है। आज जबकि भारतीय समाज की एकजुटता के सान्निध्य में अयोध्या में प्रभु राम का भव्य मंदिर बना रहा है तो ऐसे में हम सभी को समाज की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी यानि अपने परिवार के प्रबोधन पर विशेष बल देना चाहिए। ऐसे में राम के सामाजिक, पारिवारिक एवं कर्त्तव्य आधारित चिंतन का परिवार के साथ प्रतिदिन 10 मिनट बैठकर विमर्श अवश्य करना चाहिए। ■

प्रकृति का पर्व वसंत पंचमी

नीलम भागी
लेखिका, जर्नलिस्ट, ब्लॉगर, ट्रैवलर

वसंत पंचमी से वसंत ऋतु का आगमन होता है। शीत ऋतु की ठिठुरनभरी ठंड का स्थान मनभावन वसंती हवा ले लेती है। वसंत को ऋतुओं का राजा इसलिए कहते हैं, क्योंकि वंसत के मौसम में पंच तत्व अपने मोहक रूप में होते हैं।

प्रकृति का इकलौता पर्व है, जिसमें लगता है कि जैसे प्रकृति ने हमें वसंत ऋतु के रूप में एक उपहार दिया है। इस समय शीत ऋतु जाने की तैयारी कर रही होती है। प्रकृति का कण-कण मनमोहक लगता है। वसंत ऐसा उत्सव है जिसमें ठंड से सिमटे पशु और परिन्दों में मानो नवजीवन का संचार हो जाता है। यानी पूरी सृष्टि में उमंग आ जाती है। जहां भी वन उपवन हैं, वहां बहार आ जाती है। खेतों में फूली हुई सरसों और फूलों के गहनों से सजी धरती की छटा देखते ही बनती है। वातावरण ऐसा कि जैसे ऋतुराज वसंत के स्वागत में कोई सुंदरी फूलों के गहने पहनकर प्रतीक्षा कर रही हो। इस मौसम में बेल बूटों और वृक्षों पर नई कोंपलों की शोभा निराली होती है। नये खिले फूलों पर भौंरे, तितलियां मंडराते रहते हैं। मधुमक्खियों में फूलों के रस को पीने की होड़ रहती है। यानि वसंत पंचमी का उत्सव चहुंओर रंग और उमंग से सराबोर करने वाला पर्व होता है।

वसंत पंचमी से वसंत ऋतु का आगमन होता है। ठंडी हवा का स्थान वसंती हवा ले लेती है। वसंत को ऋतुओं का राजा इसलिए कहते हैं, क्योंकि पंच तत्व - जल, वायु, धरती, आकाश और अग्नि सभी अपने मोहक रूप में होते हैं। स्वच्छ आकाश, सूर्य का ताप, सर्दी की कंपकंपाहट से मुक्त करता है, तो पक्षी उड़ने का सुख प्राप्त करते हैं। सावन की हरियाली सर्दी तक बूढ़ी हो जाती है, ऐसे में वसंत उसे फिर से युवा कर देता है। सतत्, सुदंर लगने वाली प्रकृति, वसंत ऋतु में सोलह कलाओं से खिल उठती है।

ब्रह्मपुराण के अनुसार ब्रह्माजी को वनस्पतियों, जीवधारियों की मनमोहक रचना के बाद संतुष्टि नहीं मिली, सृष्टि मौन और उदास महसूस हुई। तब भगवान विष्णु के कहने पर उन्होंने अपने कमण्डल के जल की अंजुरी भरकर उसे अभिमंत्रित करके भूमि पर छिड़का, तो वृक्षों से एक अद्भुत चर्तुभुजी देवी प्रकट हुईं। जिसके एक हाथ में वीणा तथा दूसरा हाथ वर की मुद्रा में था। अन्य दोनों हाथों में पुस्तक एवं माला थी। तब ब्रह्मा ने देवी से वीणा बजाने का अनुरोध किया। देवी की वीणा की झंकार सुनते ही जीवों को वाणी मिल गई। जल की धारा में कल-कल और हवा में सरसराहट के साथ मूक सृष्टि मुखर हो गई। वह तिथि माघ महीने की शुक्ल पक्ष की पंचमी थी। जिसे भारत, नेपाल, बांग्लादेश, और इण्डोनेशिया में वसंत पंचमी के रूप में मनाते हैं। मां सरस्वती को वागीश्वरी, भगवती, शारदा, वीणावादिनी और विद्या, बुद्धि देने वाली देवी के नाम से भी जाना जाता है। इस तरह मां सरस्वती की विभिन्न रूपों में आराधना की जाती है। मां शारदा कला और संगीत की देवी भी कहलाती हैं। सोलह कलाओं से संपूर्ण श्री कृष्ण के लिए ब्रह्मवैवर्त पुराण के अनुसार, सर्वप्रथम श्रीकृष्ण ने ही सरस्वती पूजन किया था।

दक्षिण भारत में इसे श्रीपंचमी कहा जाता हैं। वसंत पंचमी के दिन पुस्तकों, वाद्य यंत्रों की पूजा करना, गृह प्रवेश, नया कारोबार शुरू करना, बच्चों को पुस्तकें भेंट करने की प्रथा है। इस दिन पीले कपड़े पहनना प्रकृति से साम्यता का भाव दर्शाता है। सरसों के फूल तो ऐसे लगते हैं मानों धरती ने पीले कपड़े पहने हों। महानगरों में जिन्होंने छतों पर बागवानी की है, उन्हें भी वसंत परिश्रम के फलस्वरूप, रंग बिरंगे फूलों का उपहार देता है। कहीं सफेद फूल, तो कहीं लाल, तो कहीं गुलाबी, तो कहीं रंग-बिरंगे फूल प्राकृतिक सौन्दर्य को बढ़ाते हैं। वसंत के मौसम में देशभर के अलग-अलग हिस्सों में फूलों से जुड़ी कई मान्यताएं और परंपराएं प्रचलित हैं। गुजरात में इस दिन फूलों का आदान-प्रदान किया जाता है।

हमारे किसी भी उत्सव में घर पकवानों की महक से भर जाता है। इसलिए इस पर्व में भी अलग-अलग राज्यों में तरह-तरह के पकवान और प्रसाद बनाने की परंपरा है। पीले चावल या हलुआ बनाना, खाना, खिलाना और परिवार सहित सरस्वती पूजन की मान्यता है। प. बंगाल में खिचड़ी, राजभोग, बिहार में केसरी रंग के मालपुआ और बूंदी, पंजाब में केसरिया मीठे और नमकीन चावल, तेलंगाना और दक्षिण भारत में शुद्ध घी में मीठे भात और केसरी लड्डू, उत्तर प्रदेश में 16 तरह के व्यंजन जिसमें पीले मीठे का भोग लगाया जाता है। महाराष्ट्र में पूरनपोली, पुआ और खास तरह से चने की दाल बनती है। पूरे देश में इस दिन बिना साहे (विवाह का शुभ मुहूर्त) के विवाह संपन्न किए जाते हैं। कोई भी शुभ कार्य कर सकते हैं। बच्चे का अन्नप्राशन यानि पहली बार अन्न खिलाने का संस्कार किया जाता हैं। बच्चे का तख्ती पूजन (अक्षर ज्ञान) करते हैं। सरस्वती पूजन के बाद तख्ती पर हल्दी के घोल से बच्चे की अंगुली से स्वास्तिक बनाते हैं। परिवार बोलता है। "गुरु गृह पढ़न गए रघुराई। अल्पकाल सब विद्या पाई।" और बच्चे की स्कूली शिक्षा शुरू होती है।

मान्यता है कि महाभारत के रचयिता वेदव्यास मानसिक उलझनों में थे, तब शांति के लिए वे तीर्थाटन पर गए। दंडकारण्य (बासर का प्राचीन नाम) तेलंगाना में, गोदावरी के तट के प्राकृतिक सौन्दर्य ने उन्हें कुछ समय के लिए रोक लिया था। यहीं ऋषि वाल्मीकि ने रामायण लिखने से पहले, मां सरस्वती को स्थापित कर उनका आर्शीवाद प्राप्त किया था। आज उसी स्थान पर मां शारदे निवास को श्री ज्ञान सरस्वती मंदिर कहते हैं। वसंत पंचमी को बासर में गोदावरी तट पर स्थित इस मंदिर में बच्चों को अक्षर ज्ञान से पहले अक्षर अभिषेक के लिए लाया जाता है। भारत भूमि ज्ञान की भूमि कहलाती है। प्राचीन समय में विदेशी छात्र बौद्ध काल में पढ़ने आए, जब वे लौटे तो अपने साथ कई भारतीय परंपराएं लेकर गये। जहां-जहां बौद्ध धर्म का प्रचार-प्रसार हुआ वहां सरस्वती पूजन भी होने लगा। चीनी और जापानी भी इस परंपरा से जुड़ गये।

वसंत पंचमी न केवल पवित्र त्यौहार है, बल्कि इससे भारतीयता और हिंदू सभ्यता की प्राचीन परंपराओं का दिग्दर्शन भी होता है। यही हमारे उत्सवों की मिठास है जिसमें प्रकृति और पर्व का गजब का समन्वय है।

पूर्वांचल में वसंत पंचमी को होलिका दहन के लिए ढाड़ा गाढ़ देते हैं। फगुआ के बिना होली कैसी! अब फगुआ, फाग, जोगीरा और होली गायन शुरू हो जाता है। जिसमें शास्त्रीय संगीत, उपशास्त्रीय संगीत और लोकगीत हर्षोल्लास से गाए जाते हैं। प्रवासी घर जाने की तैयारी शुरू कर देते हैं।

वृंदावन में बांके बिहारी मंदिर, शाह बिहारी मंदिर, मथुरा के श्री कृष्ण जन्मस्थान और बरसाना के राधाजी मंदिर में ठाकुरजी को वसंत पंचमी के दिन पीली पोशाक पहनाई जाती है। वसंत पंचमी से फाग गाने की शुरुआत होती है। देश विदेश से श्रद्धालु ब्रजमंडल की होली में शामिल होने के लिए तैयारी शुरु कर देते हैं। इस दिन से ब्रज में चलने वाले 40 दिन के उत्सव पर, होलिका दहन को अनोखा नजारा देखना अपने आप में सौभाग्य की बात है। वसंत पंचमी से वसंत ऋतु शुरू होती है और होली पर उल्लास चरम पर होता है इसके साथ ही वसंतोत्सव पूर्ण होता है। वसंत पंचमी न केवल पवित्र त्यौहार है, बल्कि इससे भारतीयता और हिंदू सभ्यता की प्राचीन परंपराओं का दिग्दर्शन भी होता है। यही हमारे उत्सवों की मिठास है जिसमें प्रकृति और पर्व का गजब का समन्वय है। ■

कविता

हे युगपुरुष नमो, विश्वास था और है
तुम ही परिवर्तन लाओगे।
इस भारत मां को एक दिन
विश्व का सिरमौर बनाओगे।
हे नमो, भारत के युवाओं में
आप ही कुंठा का भाव हटा।
निज जननी, जन्मभूमि पर
गौरव करना सिखलाओगे।
था वो भी एक धर्मयुद्ध
अधर्म पर धर्म,अन्याय पर न्याय का।
अनीति पर नीति,असत्य पर सत्य का।
था चुना कृष्ण ने तब अर्जुन को
है चुना कृष्ण ने इस बार तुम्हे।
हे नमो, हमारे ज्योतिषियों की
भविष्यवाणियों को तुम ही
सच कर दिखलाओगे।
एक दिन हिन्दुस्तान की विजय पताका
विश्व में फहराओगे।
विजयी विश्व तिरंगा प्यारा
को सच कर दिखलाओगे।

मृदुला श्रीवास्तव
नोएडा

विशेष समाचार

21 दिसंबर : भारतीय नागर विमानन क्षेत्र में साल 2014 में 400 विमान थे, आज 644 विमान हो गए हैं।

22 दिसंबर : हरियाणा के कुरुक्षेत्र में अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव-2023 के उपलक्ष्य में आयोजित संत सम्मेलन को केन्द्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने संबोधित किया।

23 दिसंबर : स्वामी दयानंद सरस्वती की 200वीं जयंती और स्वामी श्रद्धानंद के बलिदान दिवस के अवसर पर हरिद्वार में गुरुकुल कांगड़ी विवि. द्वारा आयोजित वेद विज्ञान एवं संस्कृति महाकुंभ का उद्घाटन।

24 दिसंबर : गुजरात के गांधीनगर जिले के कलोल में पानसर तालाब का लोकार्पण। जैन श्रेष्ठियों के कारण पानसर एक उदाहरण योग्य गांव है।

25 दिसंबर : प्रधानमंत्री ने पंडित मदनमोहन मालवीय की 162वीं जयंती के अवसर पर पण्डित मदनमोहन मालवीय सम्पूर्ण वाङ्मय का लोकार्पण किया। 11 खंडों की पहली श्रृंखला जारी।

26 दिसंबर : ग्वालियर में तानसेन समारोह के अंतर्गत आयोजित ताल दरबार कार्यक्रम में एक साथ 1,282 तबला वादकों की प्रस्तुति गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में दर्ज।

27 दिसंबर : न्यूजीलैंड के ऑकलैंड में भारत का महावाणिज्य दूतावास खोलने के प्रस्ताव को मंजूरी।

28 दिसंबर : मिसाइल सह गोला बारूद (एमसीए) बार्ज एलएसएएम 10 (यार्ड 78) पोत का जलावतरण।

29 दिसंबर : बेंगलुरु में हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के एयरो इंजन अनुसंधान एवं विकास केंद्र में नई डिजाइन और परीक्षण सुविधा का शुभारंभ।

30 दिसंबर : प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अयोध्या में मीरा मांझी के घर गये। वह उज्ज्वला योजना की 10 करोड़वीं लाभार्थी हैं।

31 दिसंबर : वाइस एडमिरल वी श्रीनिवास ने दक्षिणी नौसेना कमान, कोच्चि के फ्लैग ऑफिसर कमांडिंग-इन-चीफ के रूप में पदभार ग्रहण किया।

साल 2024

1 जनवरी : गुजरात ने एक उल्लेखनीय उपलब्धि के तहत 108 स्थानों पर एक साथ सबसे अधिक लोगों ने सूर्य नमस्कार कर गिनीज वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया।

2 जनवरी : प्रधानमंत्री लक्षद्वीप पहुंचकर वहां की प्रगति से जुड़े पहलुओं पर समीक्षा बैठक की।

3 जनवरी : लक्षद्वीप के कवरत्ती में 1150 करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाओं का उद्घाटन और शिलान्यास।

4 जनवरी : भारतीय खिलौना उद्योग में वित्त वर्ष 2014–15 की तुलना में वित्त वर्ष 2022–23 में आयात में 52 प्रतिशत की गिरावट और निर्यात में 239 प्रतिशत की बढ़ोत्तरी।

5 जनवरी : अयोध्या हवाई अड्डे को अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा घोषित। इसका नाम 'महर्षि वाल्मीकि अंतरराष्ट्रीय हवाई अड्डा, अयोध्या धाम' हुआ।

6 जनवरी : भारत का पहला सौर अनुसंधान उपग्रह आदित्य-एल1 अपने गंतव्य तक पहुंचा।

7 जनवरी : बेंगलुरू में आयोजित तीन दिवसीय श्री अन्न एवं जैविक अंतरराष्ट्रीय व्यापार मेले का समापन।

8 जनवरी : नदी पर्यटन के विकास के लिए भारत की पहली अंतर्देशीय जलमार्ग विकास परिषद ने 45,000 करोड़ रुपये आवंटित किए।

9 जनवरी : राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू ने राष्ट्रपति भवन में आयोजित एक समारोह में खेल और साहसिक पुरस्कार 2023 प्रदान किए।

10 जनवरी : गांधीनगर में 10वें वाइब्रेंट गुजरात ग्लोबल समिट 2024 का उद्घाटन। इसमें 34 सहभागी देशों व 16 भागीदार संगठनों ने भाग लिया।

11 जनवरी : भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान को 'उत्कृष्ट उपलब्धि' श्रेणी में वर्ष 2023 के लिए इंडियन ऑफ द ईयर अवार्ड।

12 जनवरी : देश के सबसे लंबे समुद्री पुल "अटल सेतु" का उद्घाटन। ये लगभग 21.8 किमी लंबा 6-लेन का पुल है।

13 जनवरी : प्रसिद्ध शास्त्रीय गायिका डॉ. प्रभा अत्रे का निधन।

14 जनवरी : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के सरसंघचालक डॉ. मोहन भागवत ने कहा कि हमें समाज को संगठित करने के लिए अधिक तेजी से कार्य करना होगा। जब सम्पूर्ण राष्ट्र एकजुट शक्ति के साथ खड़ा होगा तो दुनिया का सारा अमंगल हरण करके देश फिर से विश्व गुरु बनकर खड़ा होगा।

15 जनवरी : भारत मौसम विज्ञान विभाग के 150 वर्ष पूरे।

16 जनवरी : जितनी गहराइयों से हम अपनी आध्यात्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक जड़ों से जुड़ेंगे, उतनी ही हम अपनी आर्थिक सम्पन्नता और सांस्कृतिक विस्तार से, स्पर्धा, संघर्ष, हिंसा, युद्ध, शोषण, अत्याचार से ग्रस्त इस मानवता को संवाद, समन्वय, संयम और आत्मीयता का परिचय दे पाएंगे - डॉ. मनमोहन वैद्य, सह सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ।

17 जनवरी : भारतीय रेलवे सुगम्य भारत अभियान के तहत 597 रेलवे स्टेशनों पर लिफ्ट या एस्केलेटर प्रदान कर दिव्यांगजनों के अनुकूल बनाया।

18 जनवरी : श्रीराम जन्मभूमि मंदिर को समर्पित 6 विशेष स्मारक डाक टिकट जारी। साथ ही विश्व के अलग-अलग देशों में प्रभु श्रीराम से जुड़े जो डाक टिकट पहले जारी हुए हैं, उनका एक एल्बम भी रिलीज हुआ।

19 जनवरी : राम मंदिर जैसा आंदोलन पूरी दुनिया में कहीं नहीं हुआ - डॉ. कृष्णगोपाल, सह सरकार्यवाह, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ।

20 जनवरी : प्रधानमंत्री ने मॉरीशस के लोगों द्वारा गाए श्री राम भक्ति के भजन और कथाएं साझा कीं। ■

1. राम की माता का नाम है।

(A) कौशल्या (B) सुमित्रा

(C) कैकेयी (D) मंथरा

2. श्री राम की बहन का क्या नाम था?

(A) रूमा (B) शान्ता

(C) सावित्री (D) अहिल्या

3. नल और नील किसकी सेना से जुड़े थे?

(A) पांडवों (B) परशुराम

(C) श्रीराम (D) रावण

4.कलयुग के पहले कौन सा युग था।

(A) वैष्णवयुग (B) त्रेतायुग

(C) सतयुग (D) द्वापर

5. राम की शक्ति पूजा किसकी रचना है?

(A) सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' (B) कबीरदास

(C) मीराबाई (D) हजारी प्रसाद द्विवेदी

6. अरुण योगीराज हैं।

(A) प्रसिद्ध मूर्तिकार (B) कलाकार

(C) भजन गायक (D) तबला वादक

7. ऐतरेय ब्राह्मण किससे संबंधित है?

(A) रामायण (B) ऋग्वेद

(C) सामवेद (D) अथर्ववेद

8. वसंत पंचमी का पर्व किस पक्ष में पड़ता है?

(A) कृतिका पक्ष (B) कृष्ण पक्ष

(C) शुक्ल पक्ष (D) भरणी पक्ष

9. शालिग्राम पत्थर पाये जाते हैं।

(A) गंगा नदी (B) यमुना नदी

(C) सरयू नदी (D) गंडकी नदी

10. भगवान शिव से संबंधित अभिलेख है।

(A) करमदण्डा अभिलेख (B) हाथीगुम्फा अभिलेख

(C) जूनागढ़ अभिलेख (D) सातवाहन अभिलेख

उत्तर

1. (A), 2.(B), 3.(C), 4.(D), 5.(A), 6.(A), 7.(B), 8. (C) , 9. (D), 10. (A)

हर दिन पावन

तिथि	विवरण
1 फरवरी, 1999	जयप्रकाश पुण्यतिथि, स्वयंसेवक (व्यवस्था के विशेषज्ञ)
2 फरवरी, 1905	दादासाहब आप्टे जयन्ती (हिन्दुस्थान समाचार के संस्थापक)
3 फरवरी, 1930	ऋषिकेश लट्टा पुण्यतिथि (देश-विदेश में स्वाधीनता की अलख जगायी)
4 फरवरी, 1920	आचार्य गिरिराज किशोर जयन्ती (प्रचारक, संगठन विस्तार में महारत)
5 फरवरी, 1905	अच्युत पटवर्धन जयन्ती, देशभक्त
6 फरवरी, 1915	रामचन्द्र द्विवेदी जयन्ती (कवि प्रदीप) (देशभक्ति गीतों के लेखक)
7 फरवरी, 1929	सुब्बाराव जयन्ती, चम्बल के सन्त
9 फरवरी, 2008	बाबा आम्टे जयन्ती, कुष्टरोगियों के भगवान, अखण्ड सेवाव्रती
10 फरवरी, 1858	राजा बख्तावर सिंह बलिदान दिवस
11 फरवरी, 1913	पंडित रामनारायण शास्त्री जयन्ती, आयुर्वेदाचार्य
12 फरवरी, 1883	शम्भुधन फूंगलो बलिदान दिवस (पूर्वांचल के महान क्रान्तिवीर)
13 फरवरी, 1707	महाराजा सूरजमल जाट जयन्ती (भरतपुर नगर की नींव रखी)
14 फरवरी	वसंत पंचमी पर्व
15 फरवरी, 1882	बद्रीदत्त पाण्डेय जयन्ती (पत्रकार)
16 फरवरी, 1896	सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' जयन्ती, हिन्दी के महाकवि
17 फरवरी, 1883	वासुदेव बलवंत फड़के बलिदान दिवस (सह्याद्रि के देशभक्त)
18 फरवरी, 1931	रामदहिन ओझा बलिदान दिवस (पत्रकार और स्वतंत्रता सेनानी)
19 फरवरी, 1906	माधवराव सदाशिवराव गोलवलकर (गुरुजी) जयन्ती, रा. स्व. संघ के द्वितीय सरसंघचालक
20 फरवरी, 1999	अटल जी की लाहौर बस यात्रा
21 फरवरी, 1929	कित्तूर की वीर रानी चेन्नम्मा पुण्यतिथि (स्वतंत्रता सेनानी)
22 फरवरी, 2008	माधवराव परलकर पुण्यतिथि (सेवा के अक्षय वट)
23 फरवरी, 1908	डॉ. रघुवीर सिंह जयंती, साहित्यकार, सांसद
24 फरवरी, 1568	कल्ला जी राठौड़ बलिदानदिवस (लोकदेवता)
25 फरवरी, 1968	केदारनाथ सहगल पुण्यतिथि, स्वतंत्रता सेनानी (काले कपड़ों वाले जनरल)
26 फरवरी, 1966	वीर विनायक दामोदर सावरकर पुण्यतिथि (हिन्दी और हिन्दुत्व प्रेमी)
27 फरवरी, 1931	चंद्रशेखर आजाद बलिदान दिवस (आजीवन आजाद रहे)
28 फरवरी, 1601	सन्त दादू जयन्ती, भक्ति आंदोलन के उन्नायक
29 फरवरी, 1920	नारायण बालकृष्ण (बापूराव) जयन्ती (साइकिल वाले पत्रकार)

भगवान श्री रामलला द्वारा धारण किए गए दिव्य आभूषण

शीष पर मुकुट या किरीट:
यह उत्तर भारतीय परम्परा में स्वर्ण निर्मित है, जिसमें माणिक्य, पन्ना और हीरों से अलंकरण किया गया है। मुकुट के ठीक मध्य में भगवान सूर्य अंकित हैं। मुकुट के दायीं ओर मोतियों की लड़ियाँ पिरोई गयी हैं।

कुण्डल:
मुकुट या किरीट के अनुरूप ही और उसी डिजाईन के क्रम में भगवान के कर्ण-आभूषण बनाये गये हैं, जिनमें मयूर आकृतियाँ बनी हैं और यह भी सोने, हीरे, माणिक्य और पन्ने से सुशोभित है।

कण्ठा:
गले में अर्द्धचन्द्राकार रत्नों से जड़ित कण्ठा सुशोभित है, जिसमें मंगल का विधान रचते पुष्प अर्पित हैं और मध्य में सूर्य देव बने हैं। सोने से बना हुआ यह कण्ठा हीरे, माणिक्य और पन्नों से जड़ा है। कण्ठे के नीचे पन्ने की लड़ियाँ लगाई गयी हैं।

भगवान के हृदय
में कौस्तुभमणि धारण कराया गया है, जिसे एक बड़े माणिक्य और हीरों के अलंकरण से सजाया गया है। यह शास्त्र-विधान है कि भगवान विष्णु तथा उनके अवतार हृदय में कौस्तुभमणि धारण करते हैं। इसलिए इसे धारण कराया गया है।

पदिक:
कण्ठ से नीचे तथा नाभिकमल से ऊपर पहनाया गया हार होता है, जिसका देवता अलंकरण में विशेष महत्व है। यह पदिक पाँच लड़ियों वाला हीरे और पन्ने का ऐसा पंचलड़ा है, जिसके नीचे एक बड़ा सा अलंकृत पेण्डेंट लगाया गया है।

वैजयन्ती या विजयमाल:
यह भगवान को पहनाया जाने वाला तीसरा और सबसे लम्बा और स्वर्ण से निर्मित हार है, जिसमें कहीं-कहीं माणिक्य लगाये गये हैं, इसे विजय के प्रतीक के रूप में पहनाया जाता है, जिसमें वैष्णव परम्परा के समस्त मंगल-चिन्ह सुदर्शन चक्र, पद्मपुष्प, शंख और मंगल-कलश दर्शाया गया है। इसमें पाँच प्रकार के देवता को प्रिय पुष्पों का भी अलंकरण किया गया है, जो क्रमशः कमल, चम्पा, पारिजात, कुन्द और तुलसी हैं।

कमर में कांची या करधनी:
भगवान के कमर में करधनी धारण करायी गयी है, जिसे रत्नजडित बनाया गया है। स्वर्ण पर निर्मित इसमें प्राकृतिक सुषमा का अंकन है, और हीरे, माणिक्य, मोतियों और पन्ने से यह अलंकृत है। पवित्रता का बोध कराने वाली छोटी-छोटी पाँच घण्टियाँ भी इसमें लगायी गयी हैं, इन घण्टियों से मोती, माणिक्य और पन्ने की लड़ियाँ भी लटक रही हैं।

भुजबन्ध या अंगद:
भगवान की दोनों भुजाओं में स्वर्ण और रत्नों से जड़ित भुजबन्ध पहनाये गये हैं।

ककण/कंगन:
दोनों ही हाथों में रत्नजडित सुन्दर कंगन पहनाये गये हैं।

मुद्रिका:
बाएँ और दाएँ दोनों हाथों की मुद्रिकाओं में रत्नजडित मुद्रिकाएँ सुशोभित हैं, जिनमें से मोतियाँ लटक रही हैं।

पैरों में छड़ा और पैंजनियाँ:
पहनाये गये हैं। साथ ही स्वर्ण की पैंजनियाँ पहनायी गयी हैं।

भगवान के बाएँ हाथ
में स्वर्ण का धनुष है, जिनमें मोती, माणिक्य और पन्ने की लटकने लगी हैं, इसी तरह दाहिने हाथ में स्वर्ण का बाण धारण कराया गया है।

भगवान के गले में
रंग-बिरंगे फूलों की आकृतियों वाली वनमाला धारण करायी गयी है, जिसका निर्माण हस्तशिल्प के लिए समर्पित शिल्पमंजरी संस्था ने किया है।

भगवान के मस्तक पर
उनके पारम्परिक मंगल-तिलक को हीरे और माणिक्य से रचा गया है।

भगवान के चरणों के नीचे
जो कमल सुसज्जित है, उसके नीचे एक स्वर्णमाला सजाई गयी है।

चूँकि पाँच वर्ष के बालक-रूप में श्रीरामलला विराजे हैं,
इसलिए पारम्परिक ढंग से उनके सम्मुख खेलने के लिए चाँदी से निर्मित खिलौने रखे गये हैं। ये हैं झुनझुना, हाथी, घोड़ा, ऊँट, खिलौनागाड़ी तथा लट्टू।

भगवान के प्रभा-मण्डल के ऊपर
स्वर्ण का छत्र लगा है।

RNI No. : UPHIN/2023/84344 Postal Reg No. : DL (DS)-61/MP/2023-24-25

NIRALA WORLD

NIRALA TRIE BY NIRALA WORLD

NIRALA WORLD RESIDENCY PRIVATE LIMITED

Corp. Office: H-61, 1st Floor, Sec-63, Noida (U.P.) 201301 | Site Office : GH-03A, Sector-2, Gr. Noida (West), U.P.

For Sales enquiries: 9212131476

Tel.: 0120-4823000, Email: sales@niralaworld.com, Web.: www.niralaworld.com